facebook.com/ thebharatshri

twitter.com/ thebharatshri

website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 27 अक्टूबर 2025 ● वर्ष 7 ● अंक 14 ● मूल्य: 5 रुपए

पियुष पांडेः वो बीस मिनट जो...

सद्गुरुदेव जी को मिला अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार

पेज-10-11

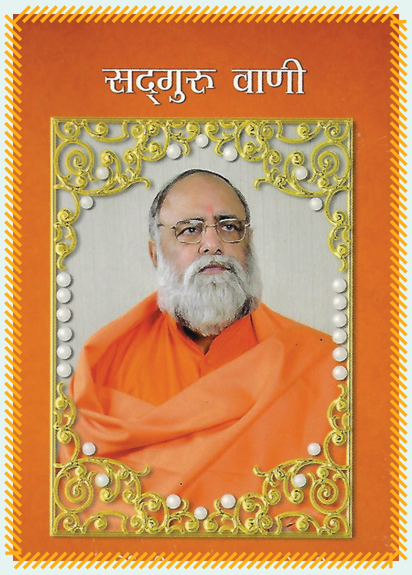

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

●

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

●

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

"मोदी शानदार दिखने वाले व्यक्ति हैं, भारत के साथ जल्द होगा व्यापार समझौता": ट्रंप

दक्षिण कोरिया में APEC सम्मेलन में बोले अमेरिकी राष्ट्रपति, कहा — मोदी मजबूत नेता हैं, हमारे रिश्ते बेहतरीन हैं

@ भारतश्री ब्यूरो

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को दक्षिण कोरिया में आयोजित एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (APEC) सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की खुलकर तारीफ की। ट्रंप ने मोदी को "सबसे शानदार दिखने वाला व्यक्ति" और "मजबूत नेता" बताते हुए कहा कि भारत और अमेरिका जल्द ही व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले हैं।ट्रंप का यह बयान ऐसे समय आया है, जब दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार वार्ता अपने अंतिम चरण में पहुंच चुकी है। सरकारी सूत्रों के मुताबिक, समझौते के पहले चरण को लेकर दोनों पक्षों के बीच लगभग सहमति बन चुकी है। अब सिर्फ दस्तावेजी भाषा पर चर्चा बाकी है।

"फादर जैसी शख्सियत"

दक्षिण कोरिया में सीईओ वार्ता सत्र को संबोधित करते हुए ट्रंप ने कहा, "मैं प्रधानमंत्री मोदी का बहुत सम्मान करता हूं। वे शानदार दिखने वाले व्यक्ति हैं। वे एक मजबूत नेता हैं और भारत जैसे विशाल देश का नेतृत्व बेहद कुशलता से कर रहे हैं।"ट्रंप ने यह भी कहा कि मोदी उनके लिए एक "फादर जैसी शख्सियत" हैं और अमेरिका-भारत संबंधों को आगे ले जाने में उनका योगदान अहम है।उन्होंने हँसते हुए कहा, "मोदी जबरदस्त हैं। मुझे उनके साथ काम करना बहुत पसंद है।"

भारत-पाकिस्तान तनाव का जिक्र

ट्रंप ने अपने भाषण में उस समय का भी उल्लेख किया, जब भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर था। उन्होंने कहा कि उस दौर में उनकी मोदी से कई बार बातचीत हुई थी। "एक बार प्रधानमंत्री मोदी ने मुझसे कहा था कि हम लड़ते रहेंगे। दो दिन बाद उन्होंने फोन किया और स्थिति सामान्य हो गई। यह एक बेहतरीन बात थी।"ट्रंप ने यह भी दावा किया कि उन्होंने दोनों देशों से संवाद के दौरान व्यापार और शांति की बात उठाई

थी।उन्होंने यह तक कहा कि अमेरिका के दबाव और कूटनीतिक भूमिका से भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्ष टला।हालांकि, भारत की ओर से इस दावे की कभी आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

व्यापार समझौते पर बड़ा संकेत

अपने भाषण के दौरान ट्रंप ने भारत-अमेरिका व्यापार संबंधों पर भी विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि "भारत और अमेरिका बहुत जल्द एक महत्वपूर्ण व्यापार समझौता करने जा रहे हैं। मैं प्रधानमंत्री मोदी का बहुत सम्मान करता हूं और उनके साथ काम करने की प्रक्रिया शानदार रही है।"ट्रंप ने कहा कि अमेरिका के लिए आयात शुल्क उसकी "आर्थिक ताकत" है, लेकिन भारत के साथ वह "संतुलित और न्यायसंगत" व्यापार चाहता है।उन्होंने कहा कि दोनों देशों की टीमें पिछले कई महीनों से बातचीत कर रही हैं और अब समझौता लगभग तय हो चुका है।

भारत और अमेरिका के लिए क्यों अहम है यह समझौता?

विश्लेषकों का मानना है कि यह समझौता दोनों देशों के लिए समान रूप से फायदेमंद हो सकता है।भारत को अमेरिकी बाजारों में अपने निर्यात बढ़ाने का अवसर मिलेगा।अमेरिका को भारत में निवेश और अपने उत्पादों के लिए नया वृहद बाजार मिलेगा।साथ ही, यह समझौता दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी को भी गहरा करेगा।रक्षा, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला जैसे क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाएँ और बढ़ जाएँगी।आर्थिक विशेषज्ञों के मुताबिक, यह समझौता भारत को वैश्विक व्यापार व्यवस्था में और मजबूत स्थिति देगा।

ट्रंप की शैली में प्रशंसा और रणनीति दोनों

ट्रंप अपने बयानों में अक्सर प्रशंसा और रणनीतिक संदेश दोनों को मिलाकर पेश करते हैं।मोदी की तारीफ करते हुए उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से यह संकेत दिया कि अमेरिका भारत को क्षेत्रीय नेतृत्व की भूमिका में देखना चाहता है।उनका यह बयान एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका की आर्थिक उपस्थिति को मजबूत करने की रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है।विशेषज्ञों के अनुसार, चीन के बढ़ते प्रभाव के बीच अमेरिका चाहता है कि भारत एक मजबूत सहयोगी की भूमिका निभाए।

ट्रंप की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है, जब अमेरिका में चुनावी माहौल फिर से गर्म हो रहा है।उनका बयान अमेरिकी-भारतीय मतदाताओं को ध्यान में रखकर भी देखा जा रहा है।अमेरिका में रहने वाला भारतीय समुदाय ट्रंप के लिए एक प्रभावशाली वोट बैंक रहा है।वहीं भारत में इस बयान को राजनयिक सफलता के रूप में देखा जा रहा है।मोदी की व्यक्तिगत छवि को लेकर ट्रंप की तारीफ ने दोनों नेताओं के रिश्ते को और सार्वजनिक रूप से मजबूत बनाया है।

चुनौतियाँ भी हैं सामने

हालाँकि, समझौते को लेकर उत्साह के बीच कुछ चुनौतियाँ भी सामने हैं।भारत को अपने किसानों और लघु उद्योगों के हितों की रक्षा करनी होगी,वहीं अमेरिका भारत से डिजिटल और ई-कॉमर्स बाजार खोलने की मांग कर रहा है।इसके अलावा, वैश्विक राजनीति, तेल की कीमतें और चीन के साथ संबंध जैसे मसले भी इस वार्ता की दिशा को प्रभावित कर सकते हैं। दक्षिण कोरिया में ट्रंप के इस बयान ने एक बार फिर यह साफ कर दिया कि भारत और अमेरिका अब मजबूत रणनीतिक साझेदारी की नई ऊँचाई पर खड़े हैं।

MN DIVINE
ORDER ALL TYPES OF :
• POOJA SAMAGRI,
• AYURVEDIC MEDICINE
• AND PRATIMA.
Be-Fresh
NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM
ORDER NOW
https://mndivine.com/
HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

बिजली दर बढ़ाने की साजिश?

पावर कॉरपोरेशन पर गंभीर आरोप, मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप की मांग

राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष बोले 33122 करोड़ सरप्लस होने के बावजूद 45% तक बढ़ाने की तैयारी

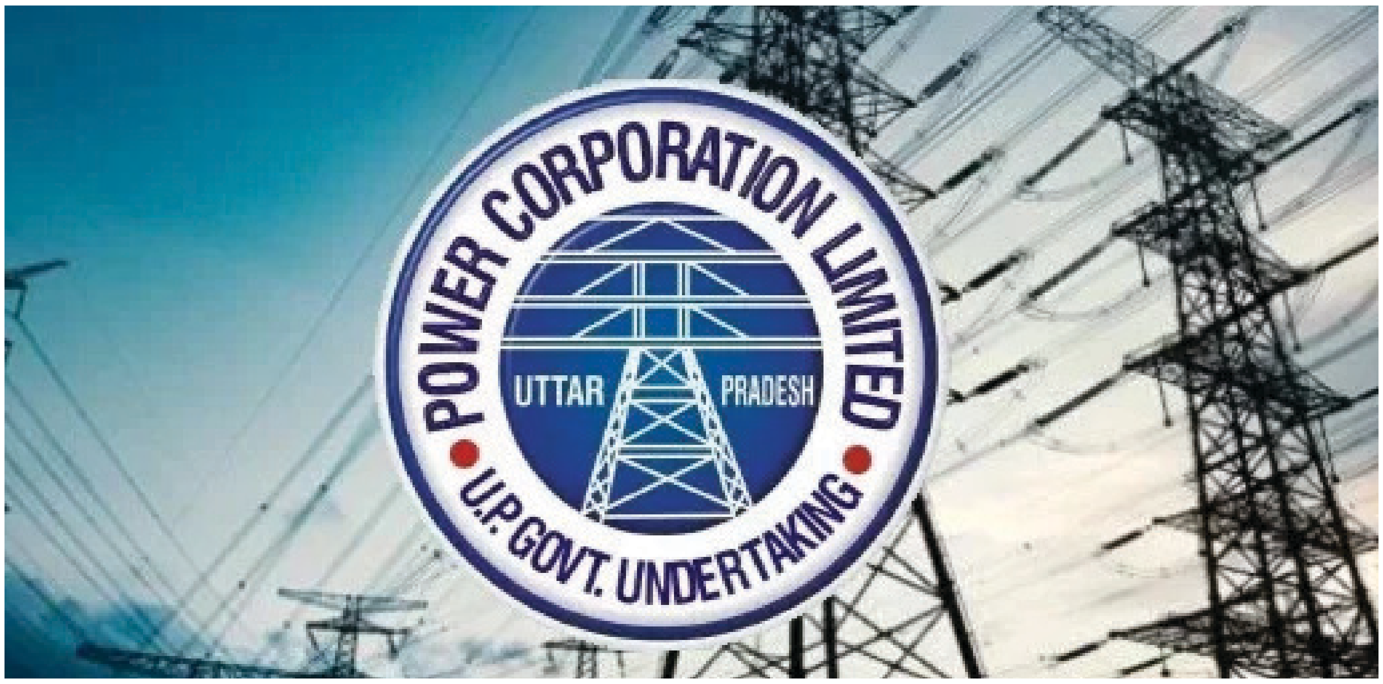

@ रिंकू विश्वकर्मा

प्रदेश में बिजली उपभोक्ताओं के लिए चिंता बढ़ाने वाली खबर सामने आई है। राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष अवधेश कुमार वर्मा ने पावर कॉरपोरेशन और विद्युत नियामक आयोग पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि दोनों संस्थाएं मिलकर बिजली दरों में भारी बढ़ोतरी की साजिश रच रही हैं।वर्मा का दावा है कि अधिकारी गलत आंकड़ों के आधार पर दरें बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं, ताकि सरकार की छवि पर नकारात्मक असर पड़े। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से सीधे हस्तक्षेप की मांग की है और आग्रह किया है कि इस साल भी बिजली दरें न बढ़ाई जाएं।

"गलत आंकड़ों से बनाया जा रहा दबाव"

अवधेश वर्मा ने कहा कि पावर कॉरपोरेशन के कुछ अधिकारी विद्युत नियामक आयोग पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उनका आरोप है कि गलत वित्तीय आंकड़े पेश कर आयोग को गुमराह किया जा रहा है ताकि बिजली दरों में वृद्धि को उचित ठहराया जा सके।उन्होंने कहा, "पिछले वर्षों की तरह इस बार भी कुछ अधिकारी गुपचुप तरीके से दरें बढ़ाने का खेल खेल रहे हैं। जबकि, आंकड़े साफ कहते हैं कि बिजली कंपनियों के पास पहले से ही भारी सरप्लस है।"

165 दिन बीत गए, फिर भी नहीं आईं दरें

नियमों के मुताबिक, वार्षिक राजस्व आवश्यकता (एआरआर) दाखिल होने के 120 दिनों के भीतर बिजली दरें घोषित हो जानी चाहिए। लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ।प्रदेश के सभी बिजली निगमों की ओर से पावर कॉरपोरेशन ने आयोग में एआरआर प्रस्ताव दाखिल किया था। इस पर सार्वजनिक सुनवाई भी पूरी हो चुकी है, फिर भी 165 दिन बीत जाने के बाद भी नई दरें घोषित नहीं की गईं।अवधेश वर्मा का कहना है कि इस देरी के पीछे भी कुछ खास कारण हैं। उनका आरोप है कि यह देरी बिजली दरें बढ़ाने की तैयारी का हिस्सा है।

33122 करोड़ का सरप्लस

राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अनुसार, बिजली कंपनियों और पावर कॉरपोरेशन पर उपभोक्ताओं का लगभग 33122 करोड़ रुपये सरप्लस है। यानी कंपनियों के पास राजस्व अधिशेष है, घाटा नहीं।इतना ही नहीं, मौजूदा वित्तीय वर्ष में भी लगभग 4,000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त सरप्लस होने की संभावना जताई जा रही है।फिर भी, वर्मा का आरोप है कि 28 से 45 प्रतिशत तक बिजली दरें बढ़ाने की तैयारी की जा रही है। उन्होंने सवाल उठाया कि जब कानून कहता है कि सरप्लस की स्थिति में दरें नहीं बढ़ाई जा सकतीं, तो पावर कॉरपोरेशन ऐसा क्यों कर रहा है?

"यह सरकार की छवि पर हमला है"

अवधेश वर्मा ने कहा कि मौजूदा योगी सरकार ने बीते वर्षों में बिजली दरों को स्थिर रखने का सराहनीय प्रयास किया है। लेकिन अब कुछ अधिकारी राजनीतिक मंशा से सरकार की छवि धूमिल करने की कोशिश में हैं।उन्होंने कहा, "सरकार लगातार उपभोक्ता हित में फैसले ले रही है, पर कुछ अफसर इस दिशा में अड़ंगा डाल रहे हैं। बिजली दरें बढ़ाने की यह कोशिश उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त बोझ डालने के साथ-साथ सरकार की साख को भी चोट पहुंचाएगी।"

मुख्यमंत्री को भेजा पत्र, आंकड़ों के साथ रिपोर्ट

वर्मा ने बताया कि उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को विस्तृत पत्र भेजा है। पत्र में उन्होंने बिजली दरों में वृद्धि के लिए तैयार किए गए गलत वित्तीय आंकड़ों का पूरा ब्यौरा संलग्न किया है।उन्होंने मुख्यमंत्री से अनुरोध किया है कि वे इस मुद्दे पर तत्काल हस्तक्षेप करें और यह सुनिश्चित करें कि इस वित्तीय वर्ष में बिजली दरें न बढ़ें।

क्या है एआरआर

एआरआर यानी वार्षिक राजस्व आवश्यकता वह प्रस्ताव होता है जिसमें बिजली कंपनियां सालभर की आय, व्यय और घाटे का अनुमान पेश करती हैं।

इसी प्रस्ताव के आधार पर विद्युत नियामक आयोग बिजली दरों में संशोधन करता है। हालांकि, इस बार वर्मा का आरोप है कि कॉरपोरेशन ने एआरआर में खर्च बढ़ाकर और आय घटाकर गलत तस्वीर पेश की है, ताकि दरें बढ़ाने का औचित्य साबित किया जा सके।

कानूनी रूप से दरें क्यों नहीं बढ़ाई जा सकतीं?

राज्य विद्युत नियामक आयोग के नियमों के अनुसार,अगर किसी बिजली कंपनी या कॉरपोरेशन के पास सरप्लस (अधिशेष धन) हो, तो उसे दर बढ़ाने की अनुमति नहीं मिल सकती।वर्मा ने कहा कि जब कंपनियों के पास उपभोक्ताओं का पैसा पहले से जमा है, तो दरें बढ़ाना न सिर्फ कानूनी उल्लंघन होगा बल्कि नैतिक रूप से भी गलत है।

उपभोक्ताओं की जेब पर भारी असर

अगर बिजली दरें 28 से 45 फीसदी तक बढ़ाई जाती हैं, तो इसका सीधा असर आम उपभोक्ता पर पड़ेगा।मध्यमवर्गीय परिवार की मासिक बिजली बिल में सैकड़ों रुपये की वृद्धि हो जाएगी।उद्योगों और व्यवसायों के लिए बिजली खर्च बढ़ने से उत्पादन लागत में भी उछाल आएगा, जिससे महंगाई का दबाव बढ़ सकता है।वर्मा का कहना है कि सरकार को इस बात को गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि यह निर्णय आम जनता की जेब पर सीधा असर डालेगा।

"हम हर स्तर पर विरोध करेंगे"

अवधेश वर्मा ने चेतावनी दी कि अगर दरें बढ़ाने की साजिश आगे बढ़ी, तो उपभोक्ता परिषद राज्यभर में आंदोलन छेड़ेगी।उन्होंने कहा, "हम शांत नहीं बैठेंगे। अगर दरें बढ़ाने की कोशिश हुई तो पूरे प्रदेश में विरोध होगा।"योगी सरकार ने बीते दो वर्षों में बिजली दरें नहीं बढ़ाईं।सरकार का रुख हमेशा यही रहा है कि जब तक आर्थिक स्थिति सामान्य नहीं होती, उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त बोझ न डाला जाए।इसी नीति के तहत, उपभोक्ता परिषद उम्मीद कर रही है कि मुख्यमंत्री एक बार फिर दरें स्थिर रखने का निर्णय लेंगे।

राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के आरोपों ने पावर कॉरपोरेशन के कामकाज पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं।क्या वाकई बिजली दरें बढ़ाने की तैयारी चल रही है?क्या उपभोक्ताओं के सरप्लस का सही उपयोग नहीं हो रहा?और सबसे अहम—क्या यह सब राजनीतिक उद्देश्य से किया जा रहा है?

दिल्ली की जहरीली हवा अब कर रही है दिमाग पर हमला

स्ट्रोक के मामले बढ़े, डॉक्टरों ने दी गंभीर चेतावनी

सिर्फ फेफड़ों नहीं, अब दिमाग पर भी प्रदूषण का असर , युवा भी बन रहे हैं शिकार, डॉक्टर बोले, "सांस नहीं, जहर ले रहे हैं हम"

@ **शोभित यादव**

दिल्ली की हवा में घुला जहर अब सिर्फ फेफड़ों को नहीं, बल्कि दिमाग पर भी हमला करने लगा है। हाल के अध्ययनों और डॉक्टरों की चेतावनियों ने इस डर को और गहरा कर दिया है। राजधानी में बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण स्ट्रोक (Brain Stroke) के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है।विशेषज्ञों का कहना है कि यह समस्या अब केवल बुजुर्गों तक सीमित नहीं, बल्कि युवा और स्वस्थ लोग भी तेजी से इसकी चपेट में आ रहे हैं।डॉक्टरों के मुताबिक, हवा में मौजूद PM2.5, NO और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसे प्रदूषक तत्व रक्त वाहिकाओं में सूजन और ब्लॉकेज पैदा करते हैं। इससे हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज और स्ट्रोक जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है।

दिल्ली की हवा धीरे-धीरे मौत बनती जा रही

राजधानी दिल्ली में इन दिनों वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) लगातार "गंभीर" श्रेणी में बना हुआ है।कई इलाकों में AQI 400 से पार चला गया है। यानी हर सांस के साथ हम अपने शरीर में जहरीले कण भर रहे हैं।डॉक्टरों का कहना है कि जब हम इस जहरीली हवा में सांस लेते हैं, तो यह शरीर में सूजन, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और ब्लड फ्लो में रुकावट पैदा करती है।यह स्थिति स्ट्रोक का सबसे बड़ा ट्रिगर बनती है , खासकर उन लोगों के लिए जो पहले से ब्लड प्रेशर या हृदय रोग से जूझ रहे हैं।

हर 20 सेकंड में एक भारतीय बनता है स्ट्रोक का शिकार

इंडियन स्ट्रोक एसोसिएशन की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर 20 सेकंड में एक व्यक्ति स्ट्रोक से प्रभावित होता है।हर साल देश में 18 लाख से अधिक नए स्ट्रोक केस दर्ज किए जाते हैं।

सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि भारत में अब स्ट्रोक की औसत आयु 50 से 60 वर्ष रह गई है।जबकि पश्चिमी देशों में यह औसत 60 से 70 वर्ष के बीच है।यानी, भारत में स्ट्रोक अब कम उम्र में ही दस्तक देने लगा है और इसकी एक बड़ी वजह वायु प्रदूषण है।

प्रदूषण कैसे करता है दिमाग पर हमला

एम्स के न्यूरोलॉजी विशेषज्ञों के मुताबिक, हवा में मौजूद PM2.5 जैसे सूक्ष्म कण हमारे फेफड़ों के रास्ते सीधे ब्लड स्ट्रीम में चले जाते हैं।

ये कण रक्त वाहिकाओं की दीवारों को नुकसान पहुंचाते हैं और सूजन पैदा करते हैं, जिससे खून के थक्के बनने लगते हैं।खून का यह थक्का जब दिमाग तक पहुंचने वाले रक्त प्रवाह को रोक देता है, तो स्ट्रोक हो जाता है।

कुछ मामलों में, सिर्फ कई घंटों तक प्रदूषित हवा में रहने से भी यह खतरा बढ़ सकता है।डॉक्टरों का कहना है कि जिन लोगों में पहले से हाई बीपी, मोटापा या शुगर की समस्या है, वे सबसे ज्यादा संवेदनशील हैं।

समय पर पहचान जरूरी

डॉक्टरों का कहना है कि स्ट्रोक के शुरुआती लक्षणों को पहचानना ही जीवन बचाने की कुंजी है।अगर समय रहते इलाज न मिले तो स्ट्रोक स्थायी विकलांगता या मौत का कारण बन सकता है। इसलिए हमेशा चेहरे का एक तरफ़ा झुक जाना या सुन्न हो जाना बड़ा खतरा है। बोलने में दिक्कत या लड़खड़ाना भी बड़ी समस्या है। शरीर के एक हिस्से में कमजोरी होना भी दिक्कत देता है। अचानक चक्कर आना या नजर धुंधली होना बहुत बड़ी पहचान है। यदि किसी व्यक्ति में ये लक्षण दिखें, तो तुरंत एम्बुलेंस बुलाकर नज़दीकी अस्पताल पहुंचना चाहिए।पहले 4 से 6 घंटे का समय बेहद अहम माना जाता है।

"यह केवल मौसम की समस्या नहीं, यह स्वास्थ्य आपातकाल है"

एम्स के वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट का कहना है कि वायु प्रदूषण अब सिर्फ सांस की बीमारी का कारण नहीं रहा, यह सीधे हमारे दिमाग और दिल को प्रभावित कर रहा है। हर दिन अस्पतालों में ऐसे मरीज बढ़ रहे हैं जिन्हें स्ट्रोक या दिल का दौरा प्रदूषण से ट्रिगर हुआ है।उन्होंने कहा कि यह स्थिति स्वास्थ्य आपातकाल जैसी है और सरकार को इस पर तुरंत ठोस कदम उठाने चाहिए।विशेषज्ञों के अनुसार, प्रदूषण से बचने के लिए कुछ आसान लेकिन कारगर उपाय अपनाए जा सकते हैं।

घर के अंदर रहें जब AQI 150 से ऊपर हो तो बाहर निकलने से बचें।एन-95 या एन-99 मास्क का उपयोग करें।घर में एयर प्यूरीफायर लगाएं, खासकर बच्चों और बुजुर्गों के लिए।फल, सब्जियां और पानी अधिक मात्रा में लें ताकि शरीर में एंटीऑक्सीडेंट बना रहे।धूम्रपान, शराब और जंक फूड से बचें। ये प्रदूषण के प्रभाव को और बढ़ाते हैं।नियमित व्यायाम और योग से रक्त प्रवाह बेहतर बना रहता है।

दिल्ली ही नहीं, एनसीआर भी खतरे में

सिर्फ दिल्ली नहीं, बल्कि नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद और गुरुग्राम में भी वायु प्रदूषण का स्तर बेहद खतरनाक हो चुका है।सीपीसीबी के आंकड़ों के मुताबिक, इन शहरों में पिछले एक सप्ताह से AQI औसतन 350 से 400 के बीच बना हुआ है।इन इलाकों में स्कूलों में बच्चों की खांसी, सिरदर्द और थकान के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं।डॉक्टरों का कहना है कि अगर यह स्थिति कुछ सप्ताह और रही, तो स्ट्रोक और हार्ट अटैक के मामलों में 15-20% तक वृद्धि देखी जा सकती है।

क्या कर रही है सरकार?

दिल्ली सरकार ने ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान लागू किया है।इसमें निर्माण कार्यों पर रोक, डीजल गाड़ियों के उपयोग में प्रतिबंध और स्कूलों में छुट्टियां जैसे कदम शामिल हैं।लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि ये उपाय तात्कालिक हैं, जबकि जरूरत है दीर्घकालिक नीति की।

"हवा साफ होगी, तो दिमाग भी सुरक्षित रहेगा"

विशेषज्ञ कहते हैं कि "लोग सोचते हैं कि प्रदूषण का असर सिर्फ सांस पर होता है, लेकिन अब वैज्ञानिक रूप से साबित हो चुका है कि यह मस्तिष्क पर भी सीधा हमला करता है। हवा जितनी गंदी होगी, स्ट्रोक का खतरा उतना ही ज्यादा।" उन्होंने कहा कि बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि उनका इम्यून सिस्टम कमजोर होता है।

दिल्ली की हवा अब सिर्फ असुविधाजनक नहीं रही, यह धीरे-धीरे जानलेवा बनती जा रही है।स्ट्रोक जैसे गंभीर रोग अब सिर्फ उम्र से नहीं, हमारी सांसों से जुड़े हैं।हमें अपने जीवनशैली और नीतियों में ऐसे बदलाव लाने होंगे जो हवा को साफ़ रखें। क्योंकि अगर हमने अब कदम नहीं उठाए, तो आने वाली पीढ़ियां ऑक्सीजन नहीं, ज़हर विरासत में पाएंगी।

समस्तीपुर से गूंजेगी नई उम्मीदें

बिहार की धरती पर चुनाव का मौसम आ गया है। 24 अक्टूबर 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समस्तीपुर जिले में एक रैली को संबोधित करेंगे। यह रैली सिर्फ एक सभा नहीं, बल्कि एनडीए गठबंधन की बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की मुहिम की शुरुआत है। समस्तीपुर का खास महत्व है क्योंकि यह पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर का जन्मस्थान है। ठाकुर जी को हाल ही में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। मोदी जी ठाकुर जी के पैतृक गांव कर्पूरीग्राम जाएंगे, वहां श्रद्धांजलि देंगे और उनके परिवार से मिलेंगे। इसके बाद दोपहर करीब 2 बजे बेगूसराय में दूसरी रैली होगी।

यह यात्रा सोचने पर मजबूर करती है कि राजनीति में इतिहास कितना बड़ा रोल अदा करता है। एक तरफ एनडीए पिछड़ी जातियों को जोड़ने की कोशिश कर रहा है, दूसरी तरफ विपक्ष सवाल उठा रहा है। बिहार के लोग, जो रोजगार, शिक्षा और विकास की तलाश में हैं, इस सबको कैसे देखेंगे? आइए, इसकी परतें खोलते हैं। बिहार की राजनीति हमेशा से जटिल रही है, लेकिन इस बार का चुनाव पिछली जाति, वर्तमान की जरूरतों और भविष्य की आशाओं के बीच संतुलन का खेल लगता है।

कर्पूरी ठाकुर: सादगी के सिपाही, न्याय के योद्धा

कर्पूरी ठाकुर का नाम बिहार में न्याय और सादगी का प्रतीक है। 24 जनवरी 1924 को समस्तीपुर जिले के पितौंझिया गांव में एक नाई समाज के परिवार में जन्मे ठाकुर जी की जिंदगी संघर्षों से भरी रही। बचपन से ही गरीबी ने उन्हें कठोर बनाया, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। शिक्षा के लिए संघर्ष किया और स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जेल गए, जहां से लौटे तो समाज सेवा का रास्ता चुना।

ठाकुर जी की राजनीतिक यात्रा 1952 से शुरू हुई, जब वे विधायक बने। 1967 में शिक्षा मंत्री बने और बिहार में बड़े बदलाव लाए। उन्होंने स्कूलों में मुफ्त किताबें और वर्दी दी, ताकि गरीब बच्चों को पढ़ाई का मौका मिले। लेकिन उनका सबसे बड़ा योगदान 1970 में आया, जब वे मुख्यमंत्री बने। बिहार में शराबबंदी लागू की, जो आज भी चर्चा का विषय है। लोगों का कहना है कि इससे परिवारों में शांति आई, लेकिन अर्थव्यवस्था पर असर पड़ा। फिर 1977 में दोबारा मुख्यमंत्री बने। यहां उन्होंने 1978 में पिछड़ी जातियों के लिए 26 प्रतिशत आरक्षण का ऐलान किया। यह फैसला इतना बड़ा था कि पूरे देश में बहस छिड़ गई। ऊपर की जातियों ने विरोध किया, लेकिन निचली जातियों में खुशी की लहर दौड़ गई।

ठाकुर जी की जिंदगी सादगी की मिसाल थी। वे साइकिल से विधानसभा जाते थे, महंगे कपड़े नहीं पहनते थे। 17 फरवरी 1988 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनकी विरासत बिहार की मिट्टी में बसी है। जनवरी 2024 में उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न मिला, जो उनके संघर्ष को सलाम था। आज मोदी जी का उनके गांव जाना इस विरासत को जीवंत करने जैसा है। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह सिर्फ चुनावी रणनीति है या सच्ची श्रद्धांजलि? ठाकुर जी के बेटे, केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर कहते हैं कि यह यात्रा एनडीए की पिछड़ा वर्ग के प्रति प्रतिबद्धता दिखाएगी। विपक्ष का कहना है कि भाजपा के पूर्ववर्ती संगठन जनसंघ ने ठाकुर जी की सरकार गिराई थी। यह विरोधाभास बिहार की राजनीति को और गहरा बनाता है। ठाकुर जी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं – वे कहते थे कि सत्ता का इस्तेमाल कमजोरों को मजबूत बनाने में होना चाहिए। क्या आज के नेता इसे याद रखेंगे?

बिहार चुनाव 2025: जाति से विकास तक की जंग

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 दो चरणों में 6 और 11 नवंबर को होंगे। 243 सीटों पर सियासत गर्म है। एनडीए में भाजपा, जदयू, हम और वीआईपी जैसे दल हैं, जबकि इंडिया गठबंधन में राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी), कांग्रेस और वामपंथी दल शामिल हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एनडीए के चेहरे हैं, लेकिन उनकी उम्र और स्वास्थ्य पर सवाल उठ रहे हैं। विपक्ष ने तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का दावेदार घोषित कर दिया है। तेजस्वी युवा चेहरा हैं, जो रोजगार और भ्रष्टाचार मुक्त बिहार का वादा कर रहे हैं।

मुख्य मुद्दे क्या हैं? सबसे बड़ा है बेरोजगारी। बिहार में युवाओं की संख्या ज्यादा है, लेकिन नौकरियां कम। एनडीए कहता है कि केंद्र की योजनाओं से 2 करोड़ नौकरियां बनीं, लेकिन विपक्ष पूछता है कि बिहार में कितनी आईं? दूसरा मुद्दा जाति जनगणना। आरजेडी ने इसे बड़ा हथियार बनाया है। 2023 की जाति जनगणना से पता चला कि ओबीसी और ईबीसी 63 प्रतिशत हैं। विपक्ष कहता है कि आरक्षण बढ़ाना चाहिए, जबकि एनडीए केंद्र की 27 प्रतिशत आरक्षण नीति का हवाला देता है। तीसरा, विकास। सड़कें, बिजली और पानी की कमी बनी हुई है। बाढ़ हर साल आती है, किसान परेशान हैं। चौथा, भ्रष्टाचार। तेजस्वी ने वादा किया है कि सत्ता में आए तो पैसे वसूलेंगे।

एनडीए की रणनीति पिछड़ी जातियों पर केंद्रित है। कर्पूरी ठाकुर का नाम लेकर वे ईबीसी वोट जोड़ना चाहते हैं। जदयू के पास नाई, कुशवाहा जैसे वोट बैंक हैं। भाजपा ऊंची जातियों के साथ ओबीसी को लुभा रही है। इंडिया ब्लॉक पिछली बार 2020 में करीब आया था, लेकिन गठबंधन टूटा। अब वे एकजुट दिख रहे हैं। लेकिन सीट बंटवारे पर झगड़े हुए। आरजेडी सबसे ज्यादा सीटें लड़ेगी। सवाल यह है कि क्या गठबंधन टिकेगा? बिहार की जनता जाति से ऊपर उठकर विकास देखेगी या पुरानी लकीरों पर चलेगी? चुनाव आयोग ने कोड ऑफ कंडक्ट सख्ती से लागू करने का ऐलान किया है, ताकि शांति बनी रहे।

समस्तीपुर यात्रा: प्रतीक और राजनीति का मेल

मोदी जी का समस्तीपुर आना सिर्फ रैली नहीं, एक प्रतीक है। कर्पूरीग्राम जाना ठाकुर जी की सादगी को याद दिलाता है। सुबह 11 बजे वे वहां पहुंचेंगे, फूल माला चढ़ाएंगे। परिवार से मिलना भावुक पल होगा। रामनाथ ठाकुर जैसे नेता एनडीए का हिस्सा हैं, जो इस यात्रा को मजबूत बनाते हैं। इसके बाद समस्तीपुर में रैली होगी, जहां हजारों लोग जुटेंगे। सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम हैं। हेलीकॉप्टर से उतरते ही स्वागत सज्जा दिखेगी।

राजनीतिक नजरिए से यह कदम चतुराई भरा है। बिहार में ओबीसी-ईबीसी वोट निर्णायक हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए ने इन्हें भुनाया था। ठाकुर जी का भारत रत्न मिलना भाजपा की रणनीति का हिस्सा था। लेकिन कांग्रेस ने तीन सवाल उठाए: जनसंघ ने ठाकुर जी की सरकार क्यों गिराई? आरक्षण विरोध क्यों किया? आज क्यों याद आया? यह बहस चुनाव को गर्म करेगी। एनडीए का जवाब है कि मोदी जी ने ही ठाकुर जी को सम्मान दिया। विपक्षी नेता लालू प्रसाद यादव ने कहा कि सच्ची श्रद्धांजलि कामों से दी जाती है, न कि चुनावी दौरे से।

समस्तीपुर जिला खुद चुनौतियों से जूझ रहा है। यहां चीनी मिलें बंद हैं, किसान परेशान। बाढ़ का खतरा हमेशा मंडराता है। रैली में मोदी जी विकास योजनाओं का जिक्र करेंगे – जैसे पीएम किसान सम्मान निधि और आवास योजना। लेकिन स्थानीय लोग पूछ रहे हैं कि ये योजनाएं कागजों से आगे कब बढ़ेंगी? यह यात्रा एनडीए को जोश देगी, लेकिन विपक्ष को भी मौका। तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार के जंगल राज को मोदी जी खुद बढ़ावा दे रहे हैं। ऐसी टिप्पणियां बहस को तीखा बनाएंगी। कुल मिलाकर, यह यात्रा बिहार की राजनीति में एक नया अध्याय जोड़ रही है, जहां इतिहास और वर्तमान आपस में उलझ रहे हैं।

बिहार का भविष्य: कौन सी राह चुनेगी जनता?

चुनाव के बाद बिहार कैसा दिखेगा? अगर एनडीए जीता, तो नीतीश कुमार या कोई नया चेहरा मुख्यमंत्री बनेगा। विकास पर फोकस बढ़ेगा, केंद्र से मदद मिलेगी। लेकिन विपक्ष कहता है कि यह सिर्फ वादे हैं। अगर इंडिया ब्लॉक सत्ता में आया, तो तेजस्वी के नेतृत्व में जाति जनगणना लागू हो सकती है, आरक्षण बढ़ सकता है। युवाओं को नौकरियां देने का दबाव बनेगा। लेकिन गठबंधन की स्थिरता सवालों के घेरे में है।

बिहार की जनता सोच रही है। एक किसान कहता है, "आरक्षण अच्छा है, लेकिन खेत में पानी और बीज की जरूरत ज्यादा है।" एक युवा छात्र बोला, "नौकरी मिले तो जाति भूल जाएंगे।" महिलाएं सुरक्षा और शिक्षा की बात करती हैं। ठाकुर जी के विचार आज भी गूंजते हैं – समानता और न्याय। मोदी जी की यह यात्रा शायद इन्हें याद दिलाए। लेकिन असली परीक्षा वोट के दिन होगी। क्या बिहार पिछली गलतियों से सीखेगा? क्या विकास जाति से ऊपर उठेगा? ये सवाल समय के साथ जवाब मांगेंगे।

समस्तीपुर से शुरू हो रही यह मुहिम बिहार को नई दिशा दे सकती है। उम्मीद है कि राजनीति सेवा बने, न कि सिर्फ सत्ता का खेल। बिहार के लोग मजबूत हैं, वे सही चुनाव करेंगे।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 27 अक्टूबर 2025, विक्रम संवत 2080

समाज में दो प्रकार के लोग

समाज में व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं एक वे जो दूसरों का मार्गदर्शन करते हैं उन्हें मोटीवेटर कहते हैं दूसरे वे जो दूसरों की सलाह से चलते हैं दूसरों से प्रभावित होकर कार्य करते हैं उन्हें मोटिवेटेड कहते हैं । इसी तरह व्यक्ति के कार्य भी दो प्रकार के होते हैं एक वे जिनकी नीयत और कार्य दोनों गलत होते हैं और दूसरे जिनकी नियत अच्छी होती है कार्य गलत होते हैं। तीसरे हुए हैं जिनकी नियत भी अच्छी होती है और कार्य भी सही होते हैं यदि हम पंडित नेहरू और गोडसे की तुलना करें तो पंडित नेहरू पहले प्रकार में जिनकी नीयत और नीतियां स्वतंत्रता के बाद पूरी तरह गलत थे गॉडसे दूसरे प्रकार में जिसकी नियत बिल्कुल सही थी और नीतियां गलत थी और गांधी तीसरे प्रकार में जिनकी नियत और नीतियां दोनों सही थी। नेहरू मोटीवेटर थे दूसरों का मार्गदर्शन करते थे और गोडसे मोटिवेटेड था दूसरों की सलाह से चलता था। मेरे विचार से यदि गॉड से सावरकर से प्रभावित न होकर गांधी से प्रभावित होता तो गोडसे नेहरू की तुलना में एक अच्छा प्रधानमंत्री बन सकता था लेकिन गॉड से हमेशा सावरकर के प्रभाव में रहा और सावरकर नेहरू अंबेडकर जिन्ना लॉर्ड माउंटबेटन के प्रभाव में रहे और इस तरह गोडसे जैसे देशभक्त का पूरा जीवन बर्बाद हो गया। इसलिए मैं हमेशा सलाह देता हूं की नियत और कार्य दोनों अपनी सोच समझ के अनुसार करना चाहिए । अपने संस्थान के सभी लोग यही कारण है कि शराफत छोड़कर समझदारी की ओर जाने की सलाह देते हैं यदि व्यक्ति समझदार होगा तो वह ना किसी को गुरु बनाएगा और ना किसी को शिष्य बनाएगा वह खुद स्वयं निर्णय लेगा। अगर गोडसे स्वयं निर्णय लेता तो अपने लिए भी ठीक था और समाज के लिए भी ठीक था।

बजरंग मुनि

जब जुबान थी राजनीति का आईना

@ **अनुराग पाठक**

आज के राजनीतिक दौर में जब बयानबाज़ी, वादाख़िलाफ़ी और सियासी जोड़तोड़ सामान्य बात बन चुकी है, ऐसे समय में इतिहास के एक प्रसंग को याद करना न केवल आवश्यक है, बल्कि आत्ममंथन का अवसर भी देता है। यह प्रसंग उस दौर का है जब राजनीति में विचार, मर्यादा और नैतिकता सर्वोपरि हुआ करते थे। जब एक नेता का शब्द उसकी पहचान था, और वचन पालन उसकी सबसे बड़ी ताकत।उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पंडित संपूर्णानंद भारतीय राजनीति के उन नेताओं में गिने जाते हैं जिनकी सादगी, विद्वता और नैतिकता उन्हें एक अलग ऊँचाई पर स्थापित करती थी। स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, प्रबुद्ध चिंतक और आदर्शवादी राजनीतिज्ञ , संपूर्णानंद का पूरा जीवन इस बात की मिसाल है कि सत्ता सिर्फ़ कुर्सी नहीं, बल्कि जवाबदेही का प्रतीक होती है।

यह उस समय की बात है जब कांग्रेस पार्टी का संगठनात्मक चुनाव चल रहा था। प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए ज़ोरदार मुकाबला था। एक ओर पंडित संपूर्णानंद के राजनीतिक प्रतिद्वंदी चंद्रभानु गुप्ता मैदान में थे, तो दूसरी ओर सत्ता पक्ष के समर्थक नेता। चंद्रभानु गुप्ता और संपूर्णानंद जी के बीच वैचारिक मतभेद सर्वविदित थे। चुनावी माहौल गर्म था और एक समय मुख्यमंत्री संपूर्णानंद जी ने एक कथन दे डाला , “यदि चंद्रभानु गुप्ता प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव जीत गए, तो मैं मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दूँगा।”राजनीति के गलियारों में यह बयान जंगल की आग की तरह फैल गया। संपूर्णानंद के विरोधियों ने इसे अवसर में बदल दिया। परिणाम यह हुआ कि चंद्रभानु गुप्ता जी भारी मतों से चुनाव जीत गए। अब सवाल था की क्या मुख्यमंत्री अपने कहे शब्द पर टिकेंगे या उसे महज़ राजनीतिक बयान बताकर आगे बढ़ जाएंगे?

मामला जल्द ही दिल्ली पहुँचा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संपूर्णानंद जी से सीधा प्रश्न किया “क्या आपने वाकई यह कहा था कि यदि गुप्ता जी जीत गए तो आप पद छोड़ देंगे?”संपूर्णानंद ने बिना किसी झिझक के उत्तर दिया “हाँ, मैंने कहा था।”नेहरू ने शांत स्वर में कहा “तो फिर आपको अब इस्तीफा दे देना चाहिए।”इतना कहना था कि पंडित संपूर्णानंद ने तत्काल मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। यह कोई मजबूरी में लिया गया निर्णय नहीं था, बल्कि अपने शब्द की लाज रखने की प्रतीकात्मक परंपरा थी। एक ऐसा निर्णय जिसने सत्ता से अधिक सम्मान और आदर्श को तरजीह दी।

आज के दौर में जब राजनीतिक बयान अक्सर जनता को भ्रमित करने, माहौल बनाने या विरोधियों को नीचा दिखाने के लिए दिए जाते हैं, तब संपूर्णानंद का यह उदाहरण एक नैतिक आदर्श बनकर सामने आता है। उस युग की राजनीति में “जुबान” किसी कागज़ी वादे से ज़्यादा वजन रखती थी। नेताओं के शब्दों पर जनता को भरोसा था क्योंकि वे जानते थे, कहने और करने में फर्क नहीं होगा।पंडित संपूर्णानंद का इस्तीफा सिर्फ़ एक व्यक्ति का निर्णय नहीं था, बल्कि राजनीति में चरित्र की सर्वोच्चता का संदेश था। यह उस दौर का दर्शन था जब नेता सत्ता पाने के लिए नहीं, बल्कि मूल्यों की रक्षा के लिए राजनीति करते थे।

सवाल यह है कि क्या आज के नेताओं में वह साहस और ईमानदारी बची है कि वे अपने कहे पर टिक सकें?क्या आज कोई मुख्यमंत्री या मंत्री अपनी जुबान की रक्षा के लिए कुर्सी छोड़ने का साहस दिखा सकता है?राजनीति में नैतिकता अब कितनी बची है, यह सोचने की बात है।पंडित संपूर्णानंद की यह घटना हमें यह भी सिखाती है कि सत्ता का सम्मान शब्दों के सम्मान से ही आता है। जब नेता अपने वचनों का पालन करता है, तब जनता का विश्वास स्वतः बढ़ता है। लेकिन जब वादे महज़ भाषण बन जाएं और बयान रोज़ बदले जाएं, तो लोकतंत्र अपनी आत्मा खो देता है।

आज राजनीति में निष्ठा की जगह रणनीति ने ले ली है, और नैतिकता की जगह सुविधा ने। लेकिन यह भी सच है कि समाज अब भी उन नेताओं को याद रखता है जिन्होंने अपने सिद्धांतों के लिए कुर्सी ठुकरा दी,चाहे वह लाल बहादुर शास्त्री हों, मोरारजी देसाई हों या पंडित संपूर्णानंद।

ऐसे में इतिहास हमें यह याद दिलाता है कि सत्ता क्षणिक होती है, पर चरित्र अमर।पंडित संपूर्णानंद का यह निर्णय न केवल भारतीय राजनीति के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय है, बल्कि आज के नेताओं के लिए भी एक दर्पण है, जिसमें वे अपनी राजनीति का चेहरा देख सकते हैं।पंडित संपूर्णानंद की कहानी हमें यह सिखाती है कि राजनीति केवल जीतने का माध्यम नहीं, बल्कि आचरण का आईना भी है। जब शब्द ही वचन बन जाएं और वचन ही कर्म, तब राजनीति समाज का नेतृत्व करती है ,अन्यथा वह सिर्फ़ सत्ता का खेल बनकर रह जाती है।आज जरूरत है कि राजनीति में फिर से वही सत्य और सादगी लौटे, जो संपूर्णानंद जैसे नेताओं ने दिखाई थी। क्योंकि लोकतंत्र की असली ताकत जनता के वोट से नहीं, बल्कि नेताओं के चरित्र से आती है।

जुबानी तीर

“ भाजपा एवं आरएसएस-जाल में उलझी है। आज ‘महागठबंधन’ एक साझा दृष्टि लेकर सामने आया है और हमारे नेता तेजस्वी यादव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह दिखाया है कि युवाओं, महिलाओं और रोजगार की बात सामने है।

मनोज झा (RJD सांसद)

“ यह ‘मैनिफेस्टो’ नहीं बल्कि झूठों का बंडल है। बिहार के लोगों को पता है कि ऐसे फरेब के वादे उन्हें धोखा दे सकते हैं।

मुख्तार अब्बास नक़वी (BJP वरिष्ठ नेता)

“ क्या यह जानते हैं कि वे क्या कह रहे हैं? उनके पिता चार फॉडर घपलों में सज़ा पा चुके हैं। बिहार की जनता जानती है कि किसने विकास में योगदान दिया है। नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार बिहार को आगे ले जाएंगे।

रवि शंकर प्रसाद (BJP सांसद)

“ **भारत और अमेरिका घनिष्ठ मित्र और स्वाभाविक साझेदार हैं। मुझे विश्वास है कि हमारी व्यापार वार्ता भारत-अमेरिका साझेदारी की असीम संभावनाओं को उजागर करने का मार्ग प्रशस्त करेगी।** ”

पीएम नरेंद्र मोदी

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

विटामिन B12 की कमी को जड़ से मिटाने के आयुर्वेदिक उपाय

बिना दवा, बिना साइड इफेक्ट

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में थकान, चक्कर आना, याददाश्त कमजोर होना या हाथ-पैरों में झनझनाहट जैसी शिकायतें आम हो गई हैं। बहुत से लोग इन लक्षणों को सामान्य कमजोरी समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन असल में यह विटामिन B12 की कमी का संकेत हो सकता है। आधुनिक चिकित्सा में इसके लिए सप्लीमेंट्स या इंजेक्शन दिए जाते हैं, लेकिन आयुर्वेद में इसके प्राकृतिक और स्थायी समाधान मौजूद हैं। आयुर्वेद न केवल शरीर की कमी को पूरा करता है, बल्कि पाचन तंत्र और रक्त निर्माण की प्रक्रिया को भी संतुलित करता है ताकि शरीर स्वयं इस विटामिन का उत्पादन और अवशोषण कर सके।

विटामिन B12 क्या है और इसकी कमी क्यों होती है?

विटामिन B12 (कोबालामिन) एक आवश्यक जल-विलेय विटामिन है जो हमारे शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण, नसों के कार्य और डीएनए के संश्लेषण के लिए जरूरी है। यह मुख्यतः मांस, दूध, अंडा, मछली जैसे पशु-उत्पादों में पाया जाता है।शाकाहारी लोग, खासकर वे जो दूध या डेयरी उत्पाद भी बहुत कम लेते हैं, उनमें इसकी कमी देखने को मिलती है। इसके अलावा, जो लोग पाचन संबंधी समस्याओं जैसे गैस, एसिडिटी, कब्ज, या लीवर की कमजोरी से पीड़ित हैं, उनमें भी यह विटामिन ठीक से अवशोषित नहीं हो पाता। आयुर्वेद इसे "अग्निमांद्य" यानी कमजोर पाचन अग्नि से जोड़ता है।

आयुर्वेद के अनुसार विटामिन B12 की कमी का कारण

आयुर्वेदिक दृष्टि से जब शरीर की जठराग्नि (पाचन शक्ति) कमजोर होती है, तो भोजन का पूर्ण पाचन नहीं हो पाता। इससे शरीर को आवश्यक रस (पोषण) नहीं मिल पाता और रक्त धातु कमजोर हो जाती है। यही कारण है कि आयुर्वेद में विटामिन B12 की कमी को सिर्फ "एक पोषक तत्व की कमी" नहीं, बल्कि "धातु पोषण की कमी" माना गया है इस स्थिति में रक्त धातु, मांस धातु और मज्जा धातु प्रभावित होती हैं, जिससे थकान, कमजोरी, सिर चकराना, ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई और मानसिक उदासी जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

विटामिन B12 की कमी के लक्षण (आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से)

अत्यधिक थकान या आलस्य रहना
चेहरा पीला पड़ना या रंग फीका होना
हाथ-पैरों में झनझनाहट या सुन्नपन
भूख कम लगना और पाचन कमजोर होना
नींद पूरी न होना या बेचैनी रहना
स्मरण शक्ति में कमी और मानसिक धुंधलापन
जीभ पर जलन या छाले होना
चक्कर आना या सिर भारी लगना

आयुर्वेद इन लक्षणों को रक्तक्षय और मज्जा धातु क्षय से जोड़ता है, जिनका उपचार केवल दवाओं से नहीं, बल्कि जीवनशैली और आहार में संतुलन लाकर किया जाता है।

आयुर्वेदिक उपाय जो विटामिन B12 की कमी को पूरा करते हैं

1. पंचगव्य घृत और च्यवनप्राश का सेवन

आयुर्वेद में पंचगव्य घृत को रक्त और मज्जा धातु पोषक माना गया है। यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और पोषक तत्वों के अवशोषण में मदद करता है।

सेवन विधिः सुबह खाली पेट 1 चम्मच गुनगुने दूध के साथ।

च्यवनप्राश में आंवला, गिलोय, अश्वगंधा जैसे तत्व होते हैं जो रक्त निर्माण में सहायक हैं।

2. आंवला (Indian Gooseberry)

आंवला को रसायन यानी पुनर्जीवक औषधि कहा गया है। यह विटामिन C से भरपूर होता है, जो शरीर में B12 के अवशोषण को बढ़ाता है।

सेवन विधिः रोजाना सुबह खाली पेट आंवला जूस या कच्चा आंवला खाएं।

3. अश्वगंधा और शतावरी

ये दोनों जड़ी-बूटियां रक्तवर्धक और तंत्रिका तंत्र पोषक हैं। अश्वगंधा शरीर में ऊर्जा, ध्यान और स्थिरता लाती है, जबकि शतावरी शरीर की थकान और कमजोरी दूर करती है।

सेवन विधिः एक चम्मच अश्वगंधा चूर्ण और आधा चम्मच शतावरी चूर्ण को दूध के साथ सुबह-शाम लें।

4. घी और तिल का सेवन बढ़ाएं

शुद्ध देसी घी और तिल (Sesame Seeds) आयुर्वेद में स्निग्ध आहार माने जाते हैं, जो मज्जा धातु को मजबूत करते हैं। तिल में आयरन, कैल्शियम, और विटामिन B समूह पाया जाता है।

सेवन विधिः भोजन में घी का प्रयोग करें और तिल लड्डू या चूर्ण का नियमित सेवन करें।

5. गिलोय और त्रिफला

ये दोनों औषधियां शरीर से विषाक्त तत्वों को बाहर निकालती हैं और पाचन अग्नि को संतुलित करती हैं। जब पाचन सुधरता है तो शरीर पोषक तत्वों को बेहतर तरीके से ग्रहण करता है।

सेवन विधिः गिलोय का रस सुबह खाली पेट और त्रिफला चूर्ण रात को सोने से पहले लें।

आहार जो विटामिन B12 की कमी को दूर करते हैं

आयुर्वेदिक आहार पद्धति के अनुसार, शरीर में किसी भी तत्व की कमी को भरने के लिए सात्विक, पौष्टिक और सुपाच्य भोजन जरूरी है।

दूध और घीः ताजा गाय का दूध और शुद्ध घी रोजाना आहार में शामिल करें।

दही और छाछः लेकिन दोपहर में लें, रात में नहीं।

अंकुरित अनाजः मूंग, चना, अलसी के बीज और मेथी अंकुरित कर सेवन करें।

बीट रूट, गाजर, पालकः ये रक्त निर्माण के लिए श्रेष्ठ सब्जियां हैं।

मूंग दाल खिचड़ीः यह पचने में आसान है और शरीर को जरूरी पोषक तत्व देती है।

सूखे मेवेः बादाम, अखरोट, काजू और अंजीर — ये विटामिन और मिनरल्स का प्राकृतिक स्रोत हैं।

मोरिंगा (सहजन के पत्ते): इसमें विटामिन B समूह प्रचुर मात्रा में होता है, जो रक्त को पोषित करता है।

जीवनशैली में बदलाव जो जरूरी हैं

सूर्य स्नान : सुबह की धूप में 15–20 मिनट बैठें, इससे शरीर का मेटाबॉलिज्म और विटामिन D-B12 संतुलन सुधरता है।

योग और प्राणायामः

अनुलोम-विलोम और भ्रामरी प्राणायाम से नसों की कार्यक्षमता बढ़ती है।

सूर्य नमस्कार शरीर की ऊर्जा को जागृत करता है।

रात को देर तक जागना और अत्यधिक तनाव लेने से बचें।

नींद पूरी करेंः 6 से 8 घंटे की नींद शरीर की मरम्मत प्रक्रिया को सक्रिय करती है।

आयुर्वेदिक टॉनिक और फार्मूले (अगर कमी गंभीर हो)

दशमूलारिष्ट – रक्त और मज्जा धातु को मजबूत करता है।

अश्वगंधारिष्ट – थकान, कमजोरी और तनाव कम करता है।

महा मनसारस – दिमागी और तंत्रिका संबंधी कमजोरी में लाभदायक।

नवायस लौह या रक्तवर्धक लौह मंडूर – आयरन और विटामिन की पूर्ति करता है।

इन औषधियों का सेवन किसी योग्य आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह के अनुसार ही करें।

विटामिन B12 की कमी आधुनिक जीवनशैली और असंतुलित आहार का परिणाम है। केवल सप्लीमेंट या इंजेक्शन लेने से इसका हल स्थायी नहीं है। आयुर्वेद इस कमी को जड़ से ठीक करने की दिशा में काम करता है — पाचन शक्ति को बढ़ाकर, रक्त धातु को पोषित करके और शरीर की प्राकृतिक अवशोषण क्षमता को पुनर्जीवित करके।

श्री रामसखा जी महाराज: रसिक सखा की दिव्य लीला

भगवान राम के रसिक सखा रूप में अवतरित हुए श्री रामसखा जी महाराज का जीवन कितना दिव्य और भावपूर्ण रहा। विक्रम संवत की अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दिनों में राजस्थान के जयपुर में एक कुलीन गौड़ ब्राह्मण परिवार में उन्होंने शरीर धारण किया। बचपन से ही उनके संस्कार असाधारण और अलौकिक थे। साधु-संतों और भगवान के भक्तों के प्रति उनके मन में बड़ा आदर-भाव रहता था। वे बड़े मृदुल स्वभाव के थे। राम की सरस लीलाओं के स्मरण मात्र से ही वे आत्म-मुग्ध हो जाया करते थे। वे भगवान के जन्मजात सखा थे। उनका मन घर पर नहीं लगा। वे जयपुर की गलता गद्दी की ओर आकृष्ट हुए। उन्होंने गलता स्थान के आचार्य चरणों को अपने भगवद्-भावों से प्रसन्न कर लिया। कभी-कभी रामलीला में उन्हें लक्ष्मण रूप में उतरना पड़ता था। एक बार लक्ष्मण के रूप में उन्होंने भगवान राम के प्रति सख्य का अद्भुत परिचय दिया। गलता के आचार्य ने इस घटना से प्रसन्न होकर उन्हें रामसखा की उपाधि दी। वे उसी समय से भगवान श्री रामभद्र के सखा रूप से प्रसिद्ध हुए।

तीर्थयात्रा और अवध में निवास

रामसखा जी ने तीर्थ-भ्रमण आरंभ किया। वे दक्षिण में उडुपी पहुंचे। उडुपी में माध्व संप्रदाय के प्रसिद्ध महात्मा वशिष्ठतीर्थ महाराज के चरणों में नत होकर द्वैत मत के अनुसार उन्होंने राम की उपासना-पद्धति अपनाई। उनकी स्वीकृति है:

'माध्व भाष्य निज द्वैत मत, मिलन द्वार हनुमान।
रामसखे विधि संप्रदा, उडुपी गुरु स्थान॥'

उडुपी में गुरु की सेवा में उन्होंने बड़ी निष्ठा दिखाई। धीरे-धीरे उनके मन में श्री अवध के प्रति अनुराग उत्पन्न होने लगा। भगवान राम ने उन्हें प्रेरणा दी कि तुम मेरे अभिन्न सखा हो, तुम्हें इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए, मेरी राजधानी तुम्हारी उपस्थिति से परम धन्य हो उठेगी। रामसखा ने सोचा कि जिन राघवेंद्र ने समुद्र पार कर सीता जी को संकट से मुक्त किया, उन्हीं की शरण में समस्त दुखभार का अंत हो जाएगा। वे श्री अवध चले आए और प्रमोद वन में निवास करने लगे। उनकी उक्ति है:

'विषय-भोग जग स्वप्नवत, समुझि परै मन माह।
'रामसखे' भजु राम को, वन प्रमोद द्रुम छाह॥'

उनकी उपस्थिति से राम की रूप-श्री प्रमोद वन में व्याप्त हो उठी। श्री अवध की दिव्यता धन्य हो गई। उनका निवास स्थान नृत्य राघव-कुंज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके दर्शन के लिए रात-दिन अयोध्या के बड़े-बड़े सिद्ध संतों की भीड़ लगी रहती थी।

अवध की रसमयी लीला और भक्ति

श्री अवध क्षेत्र की महिमा कितनी रसमयी और चिन्मय है। श्री अयोध्या के प्रमोद वन में भगवान सीता-राम के सरस रूप-सौंदर्य से समलंकृत और नित्य प्राणमय नृत्य राघव कुंज और श्रावण कुंज के दर्शन मात्र से ही परम रसिक रामसखा जी महाराज का भाव लावण्य नयनों

में थिरक उठता है। वे भगवान राम के लीला रस के सिद्ध भाव स्वरूप थे। श्री रामसखा जी महाराज ने विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में अयोध्या को अपनी सरस उपस्थिति से रस-वृंदावन में परिणत कर दिया। वे विंदु संप्रदायाचार्य अनंत श्री विभूषित सत रामप्रसाद जी महाराज के समकालीन थे। उनके पवित्र निवास से अयोध्या के कण-कण में रस की सरयू प्रवाहित हो उठी। यह कहना समीचीन है कि वे अयोध्या के श्री भट्ट थे। जिस प्रकार वृंदावन में महारसिक श्री भट्ट ने प्रिया-प्रियतम का शास्त्र सम्मत शृंगार गाया, उसी प्रकार सत रामसखा जी ने सख्य-भाव के स्तर से राम का सरस लीला यश गाया। अवध में सत रामसखा जी महाराज का मन लग गया। उनके नयनों ने देखा कि सरयू सरिता के घाट मणि निर्मित हैं, उनकी शोभा अद्भुत है। प्रमोद वन में नित्य वसंत रात-दिन दिव्य प्रकृति का शृंगार करता रहता है। जल कमल और स्थल कमलों पर अलि गण गूंज रहे हैं। कोकिल की स्वर लहरी और मयूर की नृत्य छवि से समस्त वातावरण रसमय है। अयोध्या में स्वयं प्रकाश सीता-राम इतने दिव्य हैं कि उसमें रवि और शशि की दीप्ति और चंद्रिका का रंग ही नहीं चढ़ता है। संत रामसखा की वाणी ऐसे श्री अवध के सौंदर्य स्तर से मुखरित हो उठी:

'काम रूप सब अवध निवासी। रघुपति सम छवि भोग विलासी॥
तह रघुवीर वैप नृप सोहहिं। कोटिन कामन की छवि मोहहिं॥
द्वै भुज राम अखंडित रूपा। तैताह है भुज सिया स्वरूपा॥
वय किशोर दोउ रहत सदाही। करत सुराज्य अवध जग माही॥'

उन्होंने राम और जनक नंदिनी की सरस झांकी से अपनी मधुर वाणी पवित्र की कि नित्य दंपति सीता-राम अशोक वन के नित्य नवीन कुंज के एक मंडप में कमल पर समासीन हैं। कमला-चंद्र कला आदि उनकी छवि के सागर में आत्म विभोर हैं। राम अनेक रमणीय कुंजों में सीता के साथ रमण शील हैं। उनके पद कंज में अनेक भ्रमर रमण कर रहे हैं। प्रभु ने रास विलास का वैप अपनाया है। अनेक सखी उनकी रासोचित सेवा में तल्लीन हैं। रामसखा की उक्ति है: 'रासादिक वहु चरित प्रभु, करत महा सुख केतु। रामसखे अति प्रेम सो, अवध जनन के हेतु॥' राम के इस राज्य में गुरु की अखंड कृपा से ही प्रवेश हो पाता है—ऐसी उनकी मान्यता थी।

चित्रकूट और मैहर में भजन

अवध में दर्शनार्थियों की भीड़ बढ़ती देख कर उन्होंने चित्रकूट में निवास किया। चित्रकूट में अनेकानेक सिद्धियां उनके चरणों की दासी हो गईं। उन्होंने उस पवित्र भूमि में बारह साल तक भजन किया। चित्रकूट में भी प्रेमियों की भीड़ बढ़ने लगी। वे भजनानंदी रस सिद्ध महात्मा थे। उन्होंने मैहर राज्य में नीलमती गंगा के तट पर कुटी बनाई और मानसिक ध्यान, पूजा और भगवद् भजन में लग गए। महाराज ने कहा कि चित्रकूट साक्षात राम का स्वरूप है। रामसखा जी की उक्ति है: 'चित्रकूट रघुनाथ स्वरूपा।' नृत्य राघव-मिलन ग्रंथ में संत रामसखा की वाणी है:

'अवध नगर ते आइके, चित्रकूट की खोर।
रामसखे मन हरि लियो, सुंदर युगल किशोर॥
बड़े बड़े नयना मारने, घुंघुर वाले बार।
रामसखे मन बस गयो, सुंदर राज कुमार॥
रत्न कीट कटि पीत पट, कर धनुही अरु तीर।
रामसखे मन बसत नित, वनमाली रघुवीर॥'

सख्य भाव की गहन भक्ति

महात्मा रामसखा के ध्येय सखा रूप में भगवान राम थे। उनकी अपने सखा के प्रति बड़ी आदर-बुद्धि थी। वे अपनी प्रत्येक क्रिया से भगवान को प्रसन्न करने की चेष्टा करते थे। उनके किसी काम में तनिक भी असावधानी के लिए स्थान नहीं था। भगवान में उनकी प्रगाढ़ प्रीति थी, अनुपम सख्य था। उनकी वाणी है: 'प्रीति रीति अति कठिन है, कहिबे की कलुनाहि। रामसखे जा तन लगी, सो जाने जिय माहि॥' उन्होंने राम से कहा कि मैंने आप को अपने तन-मन दे दिए पर आप ने मेरी प्रीति की ओर देखा तक नहीं, आप की यह कितनी बड़ी अनरीति है। उन्होंने भगवान को उलाहना दी: 'तुम हमसे रूठे रहत, हम तुम्हरे आधीन। रामसखे नहि चाहिये, ऐसी तुम्हें प्रवीन॥' अवध-निवास-काल में महाराज रामसखा नित्य कनक भवन में भगवद्-सखा के आचरण के अनुरूप ही प्रभात काल में और संध्या को राघवेंद्र सरकार और जगदंबा जानकी का कुशल-समाचार लेने जाया करते थे। उनकी सख्य-निष्ठा उच्च कोटि की थी। वे कभी कनक-भवन-मंदिर में प्रवेश नहीं करते थे, बाहर के प्रधान दरवाजे से ही लौट आया करते थे। उनमें इस बात का बड़ा अभिमान था कि मैं जगदीश्वर राम का मित्र हूं। वे आठ कहार की पालकी पर ही कनक भवन जाया करते थे, यह सोच कर कि उनके सखा राम विश्व पति हैं, विश्व के हित में रात-दिन व्यस्त हैं। दर्शन न करने का नियम लिया था, द्वारपाल पालकी देखते ही सम्मुख खड़ा हो जाता था। महाराज पालकी से बाहर निकल कर पूछते थे कि सरकार सकुशल तो हैं, और जगदंबा के चरणों में प्रणाम निवेदन कर अपने नृत्य राघव-कुंज में चले आया करते थे। अवध-निवास-काल में एक दिन के लिए भी इस नियम में शिथिलता नहीं आने पाई। उनका दृढ़ सिद्धांत था कि जीव परमात्मा (राम) का नित्य सखा है। जगत में उसकी रति जब बढ़ जाती है तब वह अपने आराध्य प्रभु को भूल जाता है और शुभाशुभ कर्म में आवद्ध होकर अनेक देह धारण कर स्वर्ग-नरक में भ्रमण करता रहता है। परमात्मा में सख्य भाव की सिद्धि कर वह अनुपम भक्ति पा जाता है। महाराज का कथन है:

'जिय ईश्वर कर सखा निज, यामें नहिं संदेह। जग रति करि प्रभु को विसरि, धरत अनेकन देह॥'

महाराज का श्री राम के चरण में अटल विश्वास था। जगत के किसी भी पदार्थ के वे आश्रित नहीं थे। वे अनन्य रसिक और राम भक्त थे। उनकी उक्ति है:

'राम रास रस जे मतवारे। तिनको लगत सकल मत खारे॥'

उन्होंने अपने राम को देही देह-विभाग से परे देखा, वे नित्य सच्चिदानंद रूप में उन्मत्त थे। उन्होंने राम का रूप संपूर्ण अनुरागमय अभिव्यक्त किया। उन्हें राम पूर्ण शृंगारमय दिख पड़े। उनकी सबसे बड़ी कामना यही थी कि सीता और राम चंद्र उनके नयनों में सदा निवास करें, उनके हृदय में इन्हीं दोनों चंद्रों का पूर्ण आधिपत्य रहे। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि ज्ञान, वैराग्य और भक्ति ही रघुपति की प्राप्ति में सहायक हैं। वे निरंतर राम के ही ध्यान और चिंतन में तन्मय रहते थे। सीता-राम का रास ही उनका मननीय विषय था। अत्यंत मधुर ढंग से उन्होंने रास तत्व का विवेचन किया है। रामसखा महाराज सख्य के माध्यम से राम के मधुर भाव के उपासक थे। उन्होंने अवध की सरस भगवदीय लीला में अप्रकट और प्रकट निकुंज रस की दिव्य भूमिका प्रस्तुत की। ऐसे मधुर वातावरण में जनक नंदिनी के मन में राम के प्रति मान का उदय होता है, पर भगवान उन्हें मनाकर अपने अनुकूल कर लेते हैं। सहसा भगवान अंतर्धान हो जाते हैं पर सीता उन्हें खोज लेती हैं। साथ ही साथ सखियों द्वारा उनके अन्वेषण का क्रम आरंभ होता है। बहिरंगा और अंतरंगा भक्ति के आवेश में उनके द्वारा भगवान की उपासना होती है। वे राम के वियोग में मग्न होती हैं। शरद ज्योत्सना में सरयू के कुंजों में वे उनको खोजती हैं। पूरे प्रसंग का वर्णन महाराज रामसखा की वाणी का अद्भुत अलंकार है। राम-मिलन में संत रामसखा ने परा भक्ति तत्व का निरूपण किया है। रसमय राम नाम उनकी साधना का प्राण है। महाराज की स्वीकृति है: 'राम नाम यह रसमय नामा। रसिक अनन्यन को सुख धामा॥ राम नाम कर जो गति पाहि॥ ताकहें और इष्ट नहि भार्वाह॥'

रचनाएँ और सरस दोहे

रामसखा महाराज ने 'नृत्य राघव मिलन' ग्रंथ की रचना की। अवध-निवास काल में रामसखा जी महाराज ने नृत्य राघव-मिलन ग्रंथ की रचना की। इस पवित्र ग्रंथ में भगवान राम की सरस भक्ति का निरूपण उत्तमोत्तम ढंग से हुआ है। उन्होंने अनेक भावपूर्ण और भक्ति परक सरस दोहे भी लिखे। इन रचनाओं में राम की लीला का रसमय वर्णन है, जो भक्तों के हृदय को छू लेता है।

बंगाल की खाड़ी में तबाही का तूफान मोन्था

आंध्र तट से टकराया, हवाएं 110 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पर; मोदी ने दी हरसंभव मदद का आश्वासन

@ मनीष पांडेय

बंगाल की खाड़ी में बना चक्रवात 'मोन्था' सोमवार को आंध्र प्रदेश के तटीय इलाकों से टकरा गया है। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि यह चक्रवात अब एक गंभीर चक्रवाती तूफान में बदल सकता है। तटीय जिलों में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश जारी है। हवा की रफ्तार 110 किलोमीटर प्रति घंटा तक पहुंच गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगले पांच दिनों तक गरज और बिजली के साथ तेज बारिश जारी रह सकती है इंडियन नेशनल सेंटर फॉर ओशन इंफॉर्मेशन सर्विसेज (INCOIS) और मौसम विभाग ने चेतावनी जारी की है कि आंध्र प्रदेश के नेल्लोर से लेकर श्रीकाकुलम तक समुद्र में 2 से 4.7 मीटर ऊंची लहरें उठ सकती हैं। ऐसे में मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह दी गई है।

मौसम विभाग ने आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा के लिए रेड अलर्ट जारी किया है। आंध्र प्रदेश के तटीय जिलों काकीनाडा, कोनासीमा, पश्चिम गोदावरी, कृष्णा, बापटला, प्रकाशम और एसपीएसआर नेल्लोर में भारी बारिश और तेज हवाओं की चेतावनी दी गई है। इसके अलावा तमिलनाडु के तिरुवल्लूर जिले और ओडिशा के दक्षिणी जिलों मलकानगिरी, कोरापुट, कालाहांडी, गजपति, नबरंगपुर, बलांगीर, कंधमाल और गंजम में भी भारी बारिश की संभावना जताई गई है।आंध्र प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के प्रबंध निदेशक प्रखर जैन ने सोमवार को बताया कि चक्रवात 'मोन्था' तट से टकराना शुरू हो चुका है। तटीय जिलों में बारिश और तेज हवाएं चल रही हैं। उन्होंने कहा कि सभी जिला प्रशासन को अलर्ट पर रखा गया है और राहत कार्यों की निगरानी की जा रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आंध्र प्रदेश को हरसंभव केंद्रीय सहायता का आश्वासन दिया है। मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी ने खुद फोन कर चक्रवात की स्थिति की जानकारी ली और केंद्र की ओर से पूर्ण सहयोग का वादा किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने सभी प्रभावित जिलों में राहत शिविरों की व्यवस्था कर दी है और आवश्यक सामग्री भेजी जा रही है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भी कहा है कि वे आंध्र प्रदेश, ओडिशा, तमिलनाडु, पुडुचेरी और अंडमान-निकोबार के लोगों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। उन्होंने बताया कि भाजपा की सभी राज्य इकाइयों को अलर्ट रहने और राहत एवं बचाव कार्यों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।मौसम विभाग ने जानकारी दी है कि आंध्र प्रदेश के तटीय जिलों में रातभर बारिश जारी रहेगी और मंगलवार सुबह तक इसकी तीव्रता बनी रहेगी। जब यह प्रणाली आगे बढ़कर आंध्र तट को पार करेगी, तब दोपहर या शाम तक बारिश की तीव्रता धीरे-धीरे कम हो जाएगी।

इस बीच, आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के कलेक्टर डी.के. बालाजी ने रविवार को संभावित रूप से प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। उन्होंने सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस वी. विद्या सागर नायडू के साथ राहत शिविरों और नियंत्रण कक्षों का निरीक्षण किया। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि सभी शिविरों में पर्याप्त भोजन, पानी और दवाइयों की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। प्रशासन ने कृतिवेन्नु, बंटुमिल्लि और पेडाना मंडलों में विशेष निगरानी बढ़ा दी है।

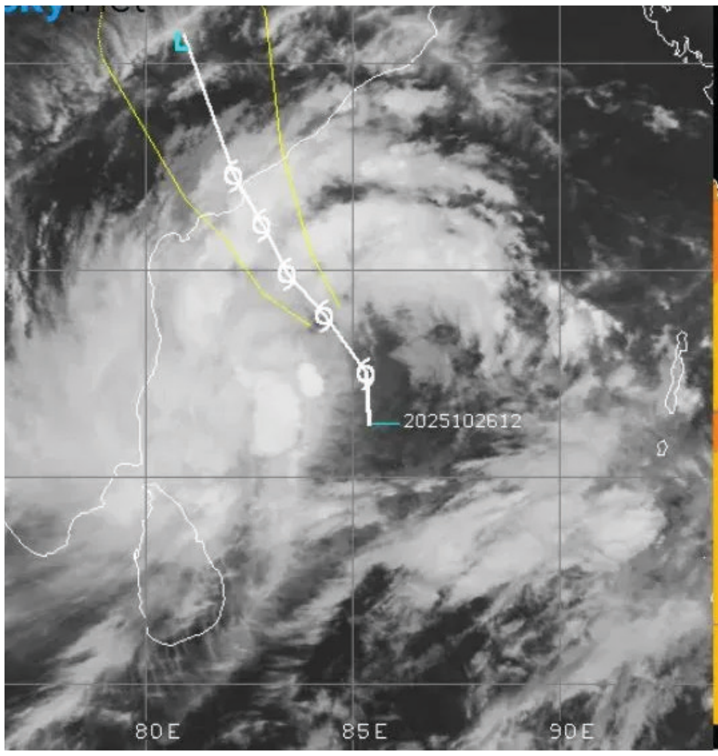

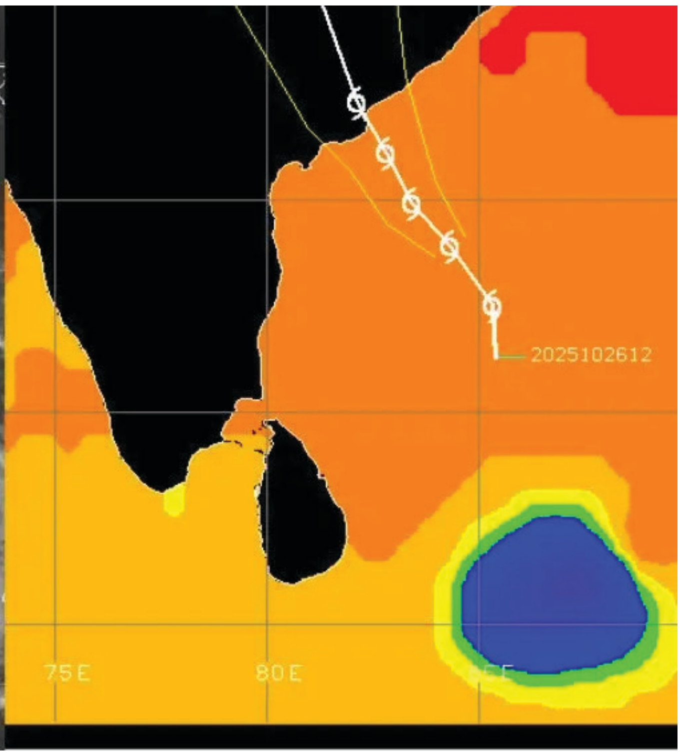

रेलवे ने भी चक्रवात 'मोन्था' से निपटने के लिए व्यापक तैयारियां की हैं। दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक संजय कुमार श्रीवास्तव ने स्थिति की समीक्षा की और सभी विभागों संचालन, इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, कमर्शियल और मेडिकल को उच्च सतर्कता पर रखा है। रेलवे नियंत्रण कक्षों को 24 घंटे संचालित रखा गया है ताकि ट्रेनों की आवाजाही, पुलों की स्थिति और जलस्तर की लगातार निगरानी की जा सके।गश्ती दलों को ट्रैक और पुलों की सुरक्षा जांच के लिए तैनात किया गया है। प्रमुख स्टेशनों जैसे विजयवाड़ा, राजमुंदरी, काकीनाडा टाउन, भीमवरम और तेनाली पर हेल्प डेस्क और 24 घंटे चालू पीआरएस रिफंड काउंटर बनाए गए हैं ताकि यात्रियों को किसी भी स्थिति में असुविधा न हो। रेलवे ने मेडिकल टीम, एम्बुलेंस और प्राथमिक उपचार केंद्र भी तैयार रखे हैं।

आंध्र प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और जिला प्रशासन के साथ रेलवे ने सीधा संपर्क स्थापित किया है ताकि वास्तविक समय में जानकारी साझा की जा सके और जरूरत पड़ने पर संयुक्त कार्रवाई की जा सके।राज्य सरकार ने तटीय इलाकों के स्कूलों और कॉलेजों में दो दिनों की छुट्टी की घोषणा की है। प्रशासन ने बिजली विभाग, जल संसाधन विभाग और स्वास्थ्य सेवाओं को भी आपात स्थिति के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया है।राज्य सरकार ने कहा है कि प्रभावित जिलों में राहत सामग्री पहुंचाने के लिए 300 से अधिक ट्रक तैनात किए गए हैं। नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (NDRF) और स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (SDRF) की 25 से अधिक टीमें प्रभावित इलाकों में भेजी गई हैं।

मौसम विभाग के अनुसार, चक्रवात 'मोन्था' मंगलवार सुबह तक भीषण चक्रवाती तूफान में बदल सकता है। हालांकि इसके 24 घंटे के भीतर कमजोर पड़ने की संभावना भी जताई गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तूफान का असर आंध्र प्रदेश के अलावा ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में भी दिख सकता है।कुल मिलाकर, बंगाल की खाड़ी में बना यह तूफान अब भारत के दक्षिणी और पूर्वी हिस्सों की परीक्षा बन गया है। राज्य सरकारें राहत और बचाव में जुटी हैं, जबकि केंद्र सरकार ने पूर्ण सहायता का वादा किया है। आने वाले 24 घंटे यह तय करेंगे कि चक्रवात 'मोन्था' कितना कहर बरपाएगा और आंध्र प्रदेश किस तरह इस आपदा से उबरता है।

सद्गुरुदेव जी को मिला अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार

इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ ज्यूरिस्ट्स, लंदन द्वारा अनंतश्री विभूषित जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी को अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया जिसे हमारे सेवादार श्री जमवाल जी ने वहां ग्रहण किया और इसे जम्मू समागम में परम पूज्य सद्गुरुदेव जी को समर्पित किया। यह 'सर्टिफिकेट ऑफ एप्रिसिएशन' अवार्ड संस्था द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर न्यूक्लीयर विरोध अभियान तथा शांतिपूर्ण विश्व के लिए भारत के सुप्रीम कोर्ट के सीनियर लॉयर एवं संस्था के अध्यक्ष डा. अदीस अग्रवाल जी ने भारत के सुप्रीम कोर्ट के सीनियर लॉयर और बार काउंसिल के एक्जीक्यूटिव मेंबर श्री जमवाल जी को भव्य समारोह में सौंपा गया।

उत्कील मंत्र का महत्व

28 सितंबर 2025 को आयोजित इस प्रभु कृपा दुख निवारण समागम में संगत को संबोधित करते हुए परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि उत्कीलन के बिना मां दुर्गा का पाठ कल्याणकारी नहीं होता है। मां दुर्गा परमात्मा है। भारत एक ऐसा देश है जहां परमात्मा स्वयं प्रकट हुआ है।

मां ही है परमात्माओं की परमात्मा अर्थात परब्रह्म

मां दुर्गा ने भगवान राम को, भगवान श्रीकृष्ण को पैदा किया है। सभी देवी-देवताओं को प्रकट करने वाली मां दुर्गा है। अथर्ववेद में वर्णन है कि जब सभी देवता भगवती मां दुर्गा के पाए गए और पूछा कि हे देवी तुम कौन हो? तब मां दुर्गा ने कहा कि मैं ब्रह्म हूं। इसके साथ में अब्रह्म भी हूं। मां ने कहा कि मैं विद्या हूं। अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि देशों में शिक्षा है लेकिन विद्या नहीं है। मां दुर्गा विद्या है जो कोई तत्ववेत्ता महाब्रह्मर्षि ही प्रदान कर सकता है। मां दुर्गा ने कहा कि मैं पहले बिल्कुल अकेली ही थी इसलिए मुझे एका कहा जाता है। मैंने ही सुष्टि की रचना करने के लिए ब्रह्मा को पैदा किया, सृष्टि का पालन करने के लिए विष्णु को पैदा किया और सृष्टि का संतुलन बनाए रखने के लिए संहार कार्य के लिए शिव को पैदा किया है। मेरी तीन शक्तियां लक्ष्मी, जो विष्णु के पास है, शिवा जो शिव के पास हैं, सरस्वती जो ब्रह्मा के पास हैं।

मां ने कहा कि मैं अविद्या भी हूं। मैं वेद हूं और वेद परमात्मा की वाणी है। मां ने यह भी कहा कि मैं अवेद हूं। मैं अजा और अनजा भी हूं। मां का कथन है कि मैं सब जगह हूं, सनातन हूं और शाश्वत हूं। अर्थात मैं ऊपर-नीचे, अगल-बगल सब जगह हूं। मां कहती हूं कि मैं सबका पालन करती हूं। मैं इन्द्र पूषा, अश्विनी कुमारों और अग्नि को भी तृप्त करती हूं। मां को प्रसन्न करने के लिए जो पाठ किया जाता है, उसके लिए उत्कीलन मंत्र का होना बहुत आवश्यक है। इसके बिना कल्याण ही नहीं होता है।

मां के पाठ का प्रभाव

मां के पाठ से सारे सुख बिना मांगे मिल जाते हैं। साधक के भाग्य में जो नहीं है वह प्राप्त कर लेता है। मां विश्व मोहिनी है और महाविद्या है। मां ब्रह्म है जिसने सबको पैदा किया है। मां ने ही कीटाणुओं, जीवाणुओं, फंगल, वायरस सभी को पैदा किया है। मां कहती है कि जो मेरा पाठ विधिपूर्वक नहीं करता है, आकाश, पाताल, पृथ्वी पर जितने रोग हैं, मैं उन्हें पैदा कर देती हूं जो विनाश का कारण बनते हैं। लेकिन जो पाठ करेगा वह बचा रहेगा नहीं तो विनाश निश्चित होता है। पाठ से आरोग्य, यश-कीर्ति, धन, ऐश्वर्य, संपदा, शत्रुनाश होता है। वह व्यक्ति तीनों लोकों में विजयी होता है, अपमृत्यु को प्राप्त नहीं होता है। साधक जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। जब तक यह पृथ्वी रहेगी तब तक उसकी पुत्र, पौत्र आदि संतान परंपरा बनी रहेगी। यह पाठ देवताओं को भी दुर्लभ है।

क्यों विशेष है मां का पाठ

मां दुर्गा के पाठ का जपजन्य पुण्य कभी समाप्त नहीं होता जबकि अन्य पाठों के जपजन्य पुण्य समाप्त हो जाते हैं। कीलन को जानकर परिहार, शापोद्धार आदि विधि से पाठ करने से साधक की प्रत्येक मनोकामना पूरी होती है। यदि विधिपूर्वक उत्कील न करके जाप करता है तो उसे हानि होती है और वह विनाश को प्राप्त हो जाता है। विधिपूर्वक पाठ को जागृत करके करने से कल्याण होता है क्योंकि सारे मंत्र सोए होते हैं, उन्हें जागृत करने के लिए उत्कीलन करना बहुत आवश्यक होता है। पाठ के विषय में भगवान ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र नारद को कहा था कि यह अक्षय पाठ है जिसे इन्द्रादि देवताओं ने भगवान नारायण के मुख से सुना था।

इस पाठ के बारे में भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी को बताया था कि यह साक्षात अलौकिक विज्ञान है। इसका पाठ करने, इससे जानने, समझने, पढ़ने व इसे धारण करने से त्रिलोक पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। यह पाठ सब पाठों से अधिक सर्वपावन है तथा सभी पुण्यों का दाता है। यह सब पापों का नाश करने वाला तथा समस्त दुखों का निवारण करने वाला है। जो इसे नियमित रूप से तीन संध्याओं में पाठ करता है, उसे सभी यज्ञों का फल प्राप्त हो जाता है। इस पाठ के जप मात्र से ही व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह सभी वेद वेत्ताओं और शास्त्रों के ज्ञाताओं से श्रेष्ठ हो जाता है इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

लेकिन किसी तत्ववेत्ता, महाब्रह्मर्षि सद्गुरु से निष्कीलन, उत्कीलन का ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही पाठ करना चाहिए। भगवान ब्रह्मा जी ने कहा कि मैं इसलिए तुम्हें उत्कीलन मंत्र दे रहा हूं।

क्या है विशुद्ध ज्ञान

ऋषि मार्कण्डेय ने भगवान शिव की स्तुति करते हुए कहा कि विशुद्ध ज्ञान ही जिनका शरीर है, तीन वेद ही जिनके दिव्य नेत्र हैं, जो कल्याण प्राप्ति के हेतु हैं तथा अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र का मुकुट धारण करते हैं, उन भगवान शिव को नमस्कार है। यहां पर जो विशुद्ध ज्ञान जिनका शरीर है का उल्लेख किया गया है तो यह है क्या? किसी को नहीं पता है। यह विशुद्ध शरीर मां दुर्गा अर्थात मां पार्वती का है। ये आगे कहते हैं कि शापरूपी कीलक का जो निवारण करने वाला है, उसे जानना चाहिए। अर्थात मंत्रों की सिद्धि में जो विघ्न उपस्थित करने वाला शापरूपी कीलक है, उसका निवारण करके ही पाठ करना चाहिए। यद्यपि इसके बिना मंत्रों का जप करने में भी जो लगा रहता है वह भी कल्याण का भागी होता है लेकिन वह स्थायी नहीं होता। जो अन्य मंत्रों का जाप न करके केवल माता देवी की ही स्तुति करता है, उस स्तुति मात्र से ही सच्चिदानंद स्वरूपिणी देवी सिद्ध हो जाती है। उन्हें अपने कार्य की सिद्धि के लिए औषधि तथा किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं रहती। बिना जप के ही उनके उच्चाटन आदि सभी अभिचारिक कर्म सिद्ध हो जाते हैं। इतना ही नहीं उनकी संपूर्ण अभीष्ट वस्तुएं भी सिद्ध हो जाती हैं।

भगवती मां दुर्गा के नौ रूप

मां दुर्गा इन नवरात्रों में नौ रूपों में प्रकट होती हैं तदानुसार ही हमें उपासना करनी चाहिए। प्रथम दिन मां शैलपुत्री, दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी, तीसरे दिन मां चन्द्रघंटा, चौथे दिन मां कूष्मांडा, पांचवे दिन मां स्कंदमाता अर्था मां दुर्गा, छठे दिन मां कात्यायनी, सातवें दिन मां कालरात्रि, आठवें दिन मां महागौरी और नवें दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा-आराधना करने से मां दुर्गा की असीम कृपा प्राप्त होती है लेकिन इसके लिए उत्कील मंत्र का होना बहुत जरूरी है।

सबका मंगल करने वाली है मां दुर्गा

भगवान शिव ने मां दुर्गा की स्तुति करते हुए कहा कि हे देवि, तुम सबका मंगल करने वाली हो। तुम शरणागत वत्सला और सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली तीन नेत्रों वाली गौरी हो, तुम दीनों और पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली नारायणी देवी हो। हे सर्वस्वरूपा तथा सब प्रकार की शक्तियों से संपन्न दिव्य रूपा दुर्गे देवि, सभी प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करो। हे देवि, तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों और कष्टों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं बल्कि तुम्हारी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं। हे दुख दरिद्रता और भय हरने वाली देवि, आपके सिवा और कोई नहीं है। हे सर्वेश्वरि, तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।

विदेशी कर्ज के दलदल में धंसा पाकिस्तान, इतना कर्ज कि गिनते-गिनते थक जाएंगे आप

मार्च 2025 तक कुल देनदारी 76 ट्रिलियन रुपये पार

सऊदी, चीन और यूएई के भरोसे टिकी अर्थव्यवस्था

बजट का 46.7% हिस्सा सिर्फ कर्ज चुकाने में जा रहा है

@ सौम्या चौबे

पड़ोसी देश पाकिस्तान आज ऐसी आर्थिक स्थिति में पहुंच गया है, जहां उसका अधिकांश बजट कर्ज चुकाने में ही खत्म हो जाता है।देश की हालत ऐसी है कि उसे अब हर दिन करीब 63 अरब रुपये से ज्यादा केवल कर्ज अदायगी के लिए जुटाने पड़ रहे हैं।आर्थिक विशेषज्ञों का कहना है कि पाकिस्तान की यह स्थिति "कर्ज के दलदल" का क्लासिक उदाहरण बन चुकी है, एक ऐसा देश जो कर्ज लेकर पुराने कर्ज चुकाता जा रहा है।

76 ट्रिलियन रुपये का कुल कर्ज

मार्च 2025 तक पाकिस्तान का कुल कर्ज 76.01 ट्रिलियन पाकिस्तानी रुपये तक पहुंच गया है। इसमें से 51.52 ट्रिलियन रुपये घरेलू कर्ज है,और 24.49 ट्रिलियन रुपये विदेशी कर्ज के रूप में दर्ज है।इस आंकड़े का मतलब है कि हर पाकिस्तानी नागरिक पर औसतन 3.2 लाख रुपये से अधिक का कर्ज है।

2025 में 23 अरब डॉलर चुकाने की चुनौती

पाकिस्तान को चालू वित्त वर्ष (2025-26) में 23 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक का विदेशी कर्ज चुकाना होगा।यह रकम उसके लिए बहुत बड़ी है, क्योंकि देश के विदेशी मुद्रा भंडार में 10 अरब डॉलर से भी कम शेष हैं।अर्थशास्त्रियों के अनुसार, यह स्थिति बताती है कि पाकिस्तान को आने वाले महीनों में कर्ज अदायगी के लिए नया कर्ज लेना ही पड़ेगा।

मुस्लिम देशों से मिली अस्थायी राहत

पाकिस्तान के इस 23 अरब डॉलर के भुगतान में से लगभग 12 अरब डॉलर की राशि अस्थायी जमा (Deposits) के रूप में है। यह पैसा पाकिस्तान ने अपने पारंपरिक दोस्त देशों सऊदी अरब (5 अरब डॉलर), चीन (4 अरब डॉलर), यूएई (2 अरब डॉलर) और कतर (1 अरब डॉलर) से लिया था।

इन देशों से पाकिस्तान को रोलओवर यानी पुनर्नवीनीकरण की उम्मीद है।अगर ये देश राहत देते हैं, तो पाकिस्तान को थोड़ी सांस मिलेगी लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ, तो हालात और गंभीर हो सकते हैं।आर्थिक विश्लेषकों के अनुसार, पाकिस्तान को विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक (ADB), इस्लामिक विकास बैंक (IDB) और अन्य संस्थानों से लिए गए 2.8 अरब डॉलर चुकाने होंगे। इसके अलावा,अंतरराष्ट्रीय बांड्स के 1.7 अरब डॉलर,कॉमर्शियल लोन के 2.3 अरब डॉलर और द्विपक्षीय कर्ज के 1.8 अरब डॉलर की अदायगी भी तय है।इन सभी पर रियायत या रोलओवर की संभावना

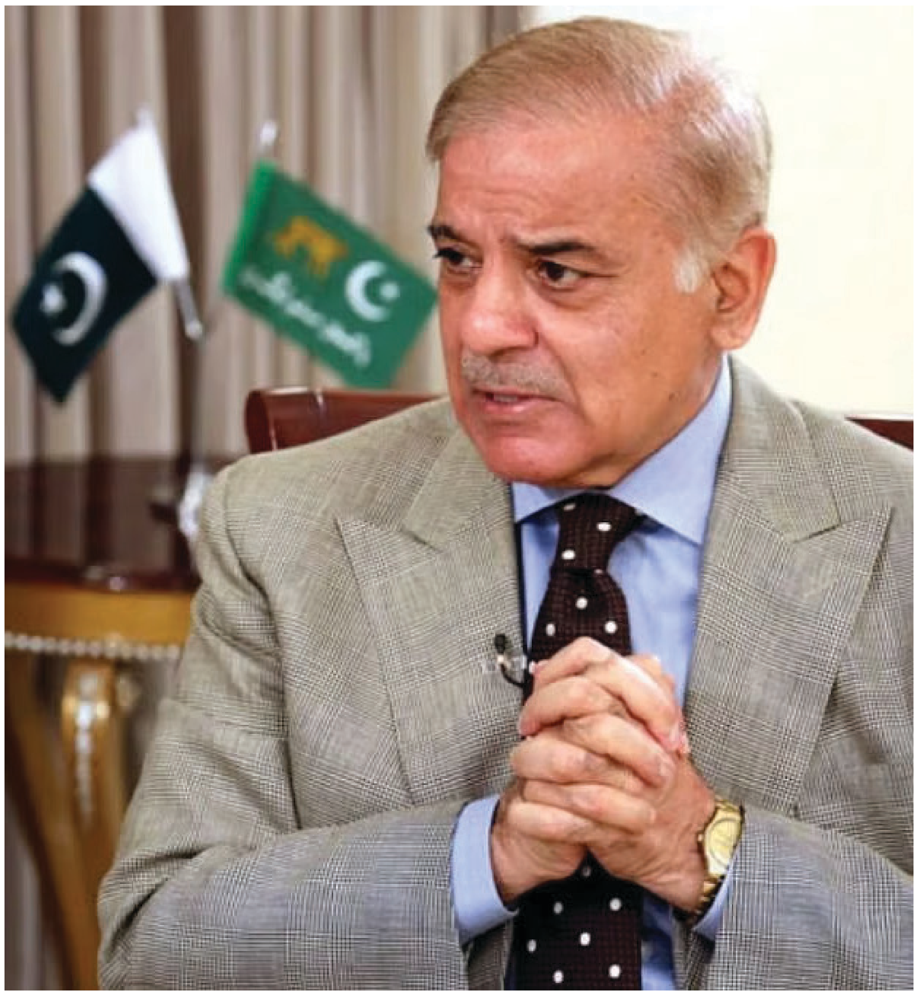

बेहद कम है।यानी पाकिस्तान को इन्हें किसी भी हालत में चुकाना ही होगा।

कर्ज ने निगल लिया आधा बजट

पाकिस्तान सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 17.573 ट्रिलियन रुपये का बजट पेश किया है।लेकिन चौंकाने वाली बात यह है कि इसमें से 8.2 ट्रिलियन रुपये (46.7%) सिर्फ कर्ज चुकाने के लिए रखे गए हैं।इसका मतलब है कि सरकार के पास विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य या रोजगार जैसे क्षेत्रों के लिए बेहद सीमित धन बचता है।विशेषज्ञों का कहना है कि यह स्थिति किसी भी देश के लिए आर्थिक दिवालियापन की चेतावनी होती है।

पाकिस्तान के कर्ज संकट की जड़ें

पाकिस्तान की मौजूदा स्थिति कोई अचानक नहीं बनी।पिछले दशकभर से देश लगातार उधारी के सहारे चल रहा है।घरेलू कर वसूली बेहद कम,निर्यात में ठहराव और ऊर्जा संकट जैसी समस्याओं ने उसकी अर्थव्यवस्था को कमजोर किया है।ऊपर से राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार ने निवेशकों का भरोसा तोड़ा है।आईएमएफ (IMF) की कड़ी शर्तों ने भी स्थिति को और नाजुक बना दिया है।

गरीबी ने तोड़ी जनता की कमर

वर्ल्ड बैंक की हालिया रिपोर्ट बताती है कि पाकिस्तान में गरीबी तेजी से बढ़ रही है।आज देश की 44.7% आबादी गरीबी रेखा से नीचे जीवन गुजार रही है।ग्रामीण इलाकों में यह संख्या 55% तक पहुंच गई है।यानी हर दो में से एक पाकिस्तानी ग्रामीण गरीब है।खाद्य कीमतों में रिकॉर्ड बढ़ोतरी, बेरोजगारी और गिरते उद्योगों ने लोगों की जेब खाली कर दी है।यह स्थिति सामाजिक असंतोष को भी जन्म दे रही है।

अगर सऊदी-चीन ने मुंह मोड़ा, तो क्या होगा?

पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था इस समय अपने पारंपरिक मित्र देशों सऊदी अरब, चीन और यूएई पर पूरी तरह निर्भर है।अगर इन देशों ने कर्ज रोलओवर से इंकार कर दिया, तो पाकिस्तान को डिफॉल्ट (कर्ज न चुका पाने) की स्थिति में पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।अर्थशास्त्री मानते हैं कि यह श्रीलंका जैसा संकट बन सकता है, जहां सरकार को जनता के विरोध और आर्थिक दिवालियापन के कारण सत्ता से हाथ धोना पड़ा था।

IMF की शर्तें और जनता की तकलीफ

हाल ही में पाकिस्तान ने IMF से नया लोन पैकेज हासिल करने के लिए करों में वृद्धि और सब्सिडी घटाने जैसे कड़े कदम उठाए हैं।इन फैसलों ने महंगाई को आसमान पर पहुंचा दिया है।पेट्रोल, डीज़ल और गैस के दामों में रिकॉर्ड वृद्धि। बिजली बिलों में 40% तक इजाफा और रोजमर्रा की चीज़ों के दाम दोगुने से ज्यादा। इससे जनता पर दोहरी मार पड़ी है ,एक ओर महंगाई, दूसरी ओर बेरोजगारी।

आर्थिक सुधार या दिखावा?

प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की सरकार दावा करती है कि देश "आर्थिक सुधार के रास्ते" पर है।लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि ये सुधार ऊपरी दिखावा भर हैं।वास्तविक सुधार तभी संभव है जब पाकिस्तान कर वसूली बढ़ाए, निर्यात में विविधता लाए और अनुत्पादक सरकारी खर्च घटाए।फिलहाल, ऐसा कुछ होता नहीं दिख रहा।

पाकिस्तानी रुपया लगातार गिरावट में

डॉलर के मुकाबले पाकिस्तानी रुपया इतिहास के सबसे निचले स्तर पर है।अक्टूबर 2025 तक एक डॉलर की कीमत 298 पाकिस्तानी रुपये के पार पहुंच गई है।रुपये की इस गिरावट से आयात महंगा हो गया है औरदेश की खाद्य, तेल और दवा आपूर्ति भी संकट में है।

पाकिस्तान इस समय ऐसी स्थिति में है जहां कर्ज चुकाने के लिए नया कर्ज लेना ही उसकी नीति बन चुकी है।यह एक कर्ज जाल है, जिससे बाहर निकलना बेहद मुश्किल होता है।अगर पाकिस्तान जल्द ही ठोस सुधारात्मक कदम नहीं उठाता,तो अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा उसे "हाई रिस्क डेफॉल्टर" घोषित किया जा सकता है।

उधार की बैसाखियों पर टिका मुल्क

पाकिस्तान का आर्थिक संकट अब केवल उसकी सरकार की नाकामी नहीं,बल्कि पूरे सिस्टम की कमजोरी बन चुका है। जिस देश का आधा बजट कर्ज चुकाने में चला जाता हो,वह विकास की दौड़ में कैसे टिकेगा ?आने वाले महीनों में सबकी निगाह इस बात पर होगी कि क्या सऊदी अरब, चीन और आईएमएफ फिर से पाकिस्तान को राहत देंगे,या फिर देश को श्रीलंका जैसे हालात झेलने पड़ेंगे।

चुनाव आयोग की तेज रफ्तार

SIR से वोटर लिस्ट को नया रूप

चुनाव का मौसम आते ही सबकी नजरें वोटर लिस्ट पर टिक जाती हैं। क्या आपकी लिस्ट में नाम है या नहीं, ये सवाल हर वोटर के मन में घूमता है। अब चुनाव आयोग ने एक नया कदम उठाया है। वो है स्पेशल इंटेंसिव रिविजन, यानी SIR। ये प्रक्रिया वोटर लिस्ट को साफ-सुथरा बनाने के लिए है। लेकिन क्या ये सिर्फ सफाई है या कुछ और भी? आइए, इसकी पूरी कहानी समझते हैं। चुनाव आयोग ने हाल ही में राज्यों को SIR की तैयारी तेज करने का आदेश दिया है। 24 अक्टूबर 2025 को दिल्ली में हुई बैठक में चीफ इलेक्शन कमिश्नर ज्ञानेश कुमार ने साफ कहा कि तैयारी पूरी करो, रिपोर्ट दो। ये कदम बिहार चुनाव के बाद पूरे देश के लिए सोचा गया है। बिहार में SIR से लाखों नाम कटे, लेकिन लाखों नए भी जुड़े। ये बदलाव अच्छा है या चिंता की बात? चलिए, स्टेप बाय स्टेप देखते हैं।

SIR क्या है? सरल शब्दों में, ये वोटर लिस्ट की गहन जांच है। घर-घर जाकर चेक किया जाता है कि कौन सच्चा वोटर है, कौन फर्जी। पुरानी लिस्ट से मैच किया जाता है। चुनाव आयोग का कहना है कि इससे चुनाव निष्पक्ष होते हैं। लेकिन कई लोग पूछते हैं – क्या ये प्रक्रिया सबको मौका देती है? बिहार जैसे राज्य में ये ट्रायल चला, अब देशभर में फैलने वाला है। ये बदलाव वोटिंग को मजबूत बनाएगा या कुछ वोटरों को बाहर कर देगा? ये सवाल मन में छोड़ते हुए आगे बढ़ते हैं।

बिहार में SIR का सफर: सफाई हुई या उलझन बढ़ी?

बिहार चुनाव 2025 के लिए SIR सबसे पहले चला। जून 2025 में शुरू हुआ ये काम सितंबर तक खत्म हुआ। चुनाव आयोग ने घर-घर जाकर 7.89 करोड़ वोटरों की जांच की। नतीजा? फाइनल लिस्ट में 7.42 करोड़ नाम बचे। यानी 47 लाख नामों में बदलाव आया। 65 लाख नाम ड्राफ्ट से कटे, जिनमें 3.66 लाख अयोग्य थे। साथ ही, 21.53 लाख नए वोटर जुड़े, जो फॉर्म 6 से आए। ये आंकड़े देखकर लगता है कि लिस्ट साफ हुई। मृत लोगों के नाम, डुप्लिकेट एंट्रीज – सब हटाए गए। चुनाव आयोग का दावा है कि 18 लाख मृत वोटर और 7 लाख डुप्लिकेट पकड़े गए।

लेकिन बिहार की सड़कों पर क्या हो रहा था? गांवों में लोग घर-घर आने वाले अफसरों से परेशान। कईयों को दस्तावेज मांगने पड़े – आधार, राशन कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र। एक किसान ने बताया, "मेरा नाम कट गया क्योंकि पुराना पता मैच नहीं हुआ। अब अपील कर रहा हूं।" सुप्रीम कोर्ट ने भी हस्तक्षेप किया। 1 सितंबर 2025 को कोर्ट ने कहा कि जिनका नाम कटा, उन्हें दूसरा मौका दो। चुनाव आयोग ने VIS यानी वोटर इंफॉर्मेशन स्लिप दी, जिसमें सीरियल नंबर, पोलिंग बूथ की डिटेल्स हैं। ये मददगार साबित हुई।

फिर भी, बिहार SIR ने सवाल खड़े किए। विपक्षी

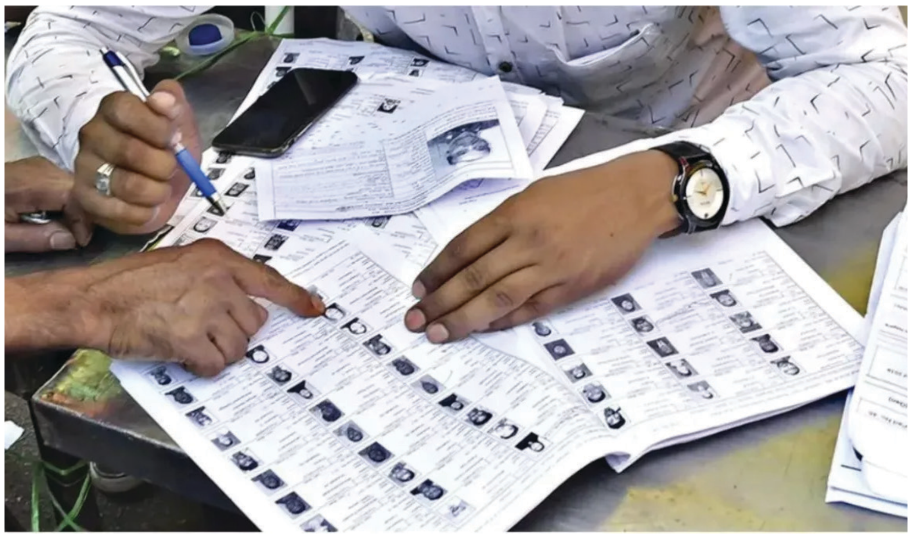

दल कहते हैं कि ये प्रक्रिया अल्पसंख्यकों को निशाना बना रही है। कुछ रिपोर्ट्स में गलत फोटो वाली लिस्ट सामने आई। BBC की एक स्टोरी में बताया गया कि डेड लोगों के नाम अभी भी लिस्ट में थे। DW ने लिखा कि 80 मिलियन वोटरों की जांच से डर का माहौल बना। लेकिन चुनाव आयोग ने सफाई दी – 99 प्रतिशत डिलीशन रूटीन थे, जैसे शिफ्ट हुए लोग या मृत। ये प्रक्रिया बिहार को सिखाती है कि SIR से लिस्ट एक्यूरेट हो सकती है, लेकिन अमल में सावधानी बरतनी पड़ेगी। क्या बिहार का अनुभव दूसरे राज्यों के लिए सबक बनेगा? ये सोचने वाली बात है।

अब बिहार के आंकड़ों को करीब से देखें। शुरू में ड्राफ्ट लिस्ट में 7.89 करोड़ थे। जांच के बाद 65 लाख कटे। इनमें से ज्यादातर वे थे जो 2003 की आखिरी SIR से मैच नहीं कर पाए। नए जुड़ने वालों में युवा वोटर ज्यादा – 18-19 साल के। चुनाव आयोग ने 6 अक्टूबर 2025 को PIB रिलीज में VIS का जिक्र किया, ताकि वोटर कन्फ्यूजन न हो। लेकिन ग्रामीण इलाकों में जागरूकता कम रही। कई महिलाओं को दस्तावेज न होने से दिक्कत हुई। ये बताता है कि SIR अच्छा इरादा रखता है, लेकिन ग्रासरूट लेवल पर मदद की जरूरत है। बिहार ने दिखाया कि बदलाव संभव है, लेकिन बिना लोगों की भागीदारी के अधूरा।

विवादों का घेरा: SIR सफाई है या बहिष्कार?

SIR की तारीफ तो हो रही है, लेकिन विवाद भी कम नहीं। बिहार में शुरू होते ही सवाल उठे – ये बैकडोर NRC तो नहीं? विपक्ष ने आरोप लगाया कि अल्पसंख्यक और गरीब वोटरों को टारगेट किया जा रहा। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स ने सुप्रीम कोर्ट में चैलेंज किया। 10 जुलाई 2025 को केस फाइल हुआ, जिसमें कहा गया कि SIR से लाखों वोटर बहिष्कृत हो सकते हैं। कोर्ट ने 7 दिन पहले सुनवाई में चुनाव आयोग से डिटेल्स मांगीं। जस्टिस ने कहा, "आयोग को अपनी ड्यूटी पता है।"

फ्रंटलाइन मैगजीन ने लिखा कि बिहार SIR से डिसेनफ्रैंचाइजमेंट का डर फैला। 22 जुलाई 2025 को टाइम्स ऑफ इंडिया ने रिपोर्ट की – 18 लाख डेड इलेक्टर्स, 7 लाख डुप्लिकेट। लेकिन क्या ये आंकड़े सही थे? स्क्रॉल.इन ने 3 घंटे पहले खबर दी कि SIR से 37 पोल ऑफिशियल्स के टर्म एक्सटेंड हुए। ये सवाल उठाता है कि प्रक्रिया पारदर्शी थी या नहीं। द वायर ने जुलाई में लिखा कि ECI की इंफॉर्मेशन स्ट्रैटजी से डेमोक्रेसी को नुकसान।

दूसरी तरफ, समर्थक कहते हैं कि SIR जरूरी था। पुरानी लिस्ट में फर्जी वोटर घुसपैठिए जैसे थे। क्विंटिलियन ने 8 दिन पहले पोस्ट किया कि SIR के बाद "इनफिल्ट्रेटर्स" का सच सामने आया। लेकिन बैलेंस देखें तो दोनों पक्ष सही लगते हैं। एक तरफ लिस्ट क्लीन होनी चाहिए, ताकि वोटिंग फेयर हो। दूसरी तरफ, प्रक्रिया इतनी सख्त न हो कि सच्चे वोटर बाहर हो जाएं। सुप्रीम कोर्ट का 2 सितंबर 2025 का एडिटोरियल "अदर चांस" कहता है – कोर्ट ऑर्डर से वोटरों को राहत मिली। ये विवाद बताते हैं कि SIR को और बेहतर बनाना पड़ेगा। क्या ये प्रक्रिया सबको शामिल करेगी या कुछ को छोड़ देगी? ये चिंता हर लोकतंत्र की है।

विवादों के बीच कुछ पॉजिटिव भी। बिहार में 99 प्रतिशत डिलीशन रूटीन बताए गए। लिंक्डइन पोस्ट में कहा गया कि तीन महीने का एक्सरसाइज सफल रहा। लेकिन एनआरसी जैसे शब्दों से डर बढ़ा। ईन्यूज रूम ने 19 घंटे पहले लिखा कि बंगाल में भी SIR से बैकडोर NRC का खतरा। ये दिखाता है कि बिहार का केस नेशनल बहस का हिस्सा बन गया। विवाद तो होंगे, लेकिन समाधान से ही आगे बढ़ेंगे। चुनाव आयोग को अब ट्रांसपेरेंसी पर फोकस करना होगा, ताकि ट्रस्ट बने।

देशभर में SIR की लहर: पहले फेज में 10 से ज्यादा राज्य

बिहार के बाद अब SIR पूरे देश में। चुनाव आयोग ने कहा कि बिहार के अनुभव से सीखकर नेशनवाइड रोलआउट होगा। 14 घंटे पहले हिंदू ने खबर दी – फर्स्ट फेज में 10 से ज्यादा राज्य कवर होंगे। NDTV ने 17 घंटे पहले बताया कि शेड्यूल इस महीने आएगा। न्यू इंडियन एक्सप्रेस ने 16 घंटे पहले लिखा कि ECI ने CEOs को एक्सपीडाइट करने को कहा।

क्या होगा प्लान? आखिरी SIR 2002-2004 में हुई थी। अब मैपिंग का काम लगभग पूरा। 1 दिन पहले हिंदू ने रिपोर्ट की कि वोटर मैपिंग रिव्यू हो रही है, एड्रेस स्टैंडर्डाइजेशन पर फोकस। 23 अक्टूबर 2025 को न्यू इंडियन एक्सप्रेस ने कहा कि रिव्यू मीट में स्टेट CEOs से तैयारी पूरी करने को कहा। न्यूज आरेना ने 16 घंटे पहले लिखा कि ECI ने डायरेक्टिव्स जारी किए। ETV भारत ने 18 घंटे पहले बताया कि CEC ज्ञानेश कुमार की अगुवाई में कॉन्फ्रेंस हुई, EC सुक्खबीर सिंह संधु और विवेक जोशी मौजूद।

पोल-बाउंड स्टेट्स जैसे असम, तमिलनाडु, पुदुचेरी, केरल, वेस्ट बंगाल के CEOs से वन-ऑन-वन बात हुई। ECI की वेबसाइट पर प्रेस रिलीज हैं, लेकिन SIR पर स्पेसिफिक अपडेट जल्द। बिहार CEO साइट पर बिहार डिटेल्स हैं। ये प्लान दिखाता है कि चुनाव आयोग सीरियस है। लेकिन चैलेंजेस? बड़े राज्य, ज्यादा वोटर – 96 करोड़ से ऊपर। संसाधन कहां से आएंगे? ट्रेनिंग, जागरूकता – ये सब सोचना पड़ेगा। फर्स्ट फेज में 10+ राज्य चुनकर शुरू करना स्मार्ट लगता है। लेकिन क्या बिहार जैसी विवाद दोहराएंगे? ये आने वाला समय बताएगा।

नेशनल SIR से फायदा क्या? साफ लिस्ट से फर्जी वोटिंग रुकेगी। युवा वोटर आसानी से जुड़ेंगे। लेकिन ग्रामीण इलाकों में दिक्कत हो सकती है। ECI को अब डिजिटल टूल्स यूज करने चाहिए, जैसे ऐप से फॉर्म भरना। ये बदलाव लोकतंत्र को मजबूत बनाएगा, अगर सबको साथ लिया जाए।

आगे की चुनौतियां: SIR से मजबूत लोकतंत्र या नई मुश्किलें?

SIR की ये रफ्तार देखकर लगता है कि चुनाव आयोग बदलाव लाना चाहता है। बिहार से सीखकर देशभर में लागू करना साहसिक कदम है। लेकिन क्या ये सबके लिए फेयर होगा? प्रोसः लिस्ट एक्यूरेट, चुनाव ट्रांसपेरेंट। कॉन्सः डिसेनफ्रैंचाइजमेंट का रिस्क, खासकर गरीबों और माइग्रेंट्स के लिए। सुप्रीम कोर्ट की भूमिका अहम रही – उसने बैलेंस बनाया।

आगे क्या? ECI को जागरूकता कैंपेन चलाना चाहिए। स्कूलों, गांवों में वर्कशॉप। दस्तावेजों की आसानी से वैरिफिकेशन। विपक्ष को भी इन्वॉल्व करें, ताकि ट्रस्ट बने। बंगाल, असम जैसे स्टेट्स में संवेदनशीलता ज्यादा, वहां सावधानी बरतें। ये प्रक्रिया लोकतंत्र की परीक्षा है। अगर सफल हुई, तो वोटिंग सिस्टम वर्ल्ड क्लास बनेगा। अगर नहीं, तो सवाल और बढ़ेंगे।

पियुष पांडे: वो बीस मिनट जो इतिहास बदल गए

भारतीय विज्ञापन की दुनिया में पियुष पांडे का नाम सुनते ही चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। फेविकोल का मजबूत जोड़, कैडबरी की नाचती लड़की, या एशियन पेंट्स के रंगीन सपने – ये सब उनकी देन हैं। लेकिन 23 अक्टूबर 2025 को, जब मुंबई के एक अस्पताल में 70 साल की उम्र में उनका निधन हो गया, तो पूरी इंडस्ट्री सन्न रह गई। संक्रमण से जूझते हुए वे चले गए, लेकिन उनकी कहानियां, उनके नारे आज भी जीवित हैं। इस लेख में हम बात करेंगे एक ऐसी घटना की, जब पियुष पांडे 'अब की बार, मोदी सरकार' नारे पर काम करने से कतराने लगे थे। लेकिन सिर्फ बीस मिनट की एक बातचीत ने सब कुछ उलट-पुलट कर दिया।

शुरुआती दिनों की मिट्टी: साधारण लड़के का असाधारण सपना

पियुष पांडे का जन्म 5 अप्रैल 1955 को हुआ था, एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार में। दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से उन्होंने इंग्लिश में एमए किया, लेकिन दिल में कुछ और ही ठहरा था। ग्रेजुएशन के बाद वे सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे थे, लेकिन किस्मत ने कुछ और लिखा। 1982 में, वे ओगिल्वी एंड माथर (अब ओगिल्वी) नाम की ब्रिटिश विज्ञापन एजेंसी में कॉपीराइटर के तौर पर शामिल हो गए। शुरुआत आसान नहीं थी। पहला ऐड सनलाइट डिटर्जेंट का था – एक साधारण साबुन का प्रचार। लेकिन पियुष में कुछ खास था। वे हिंदी की सड़क की भाषा को ऐड्स में लाए, जो पहले अंग्रेजी की चमक-दमक से भरी रहती थी।

उनके करियर का असली मोड़ आया 1990 के दशक में। फेविकोल के ऐड्स से शुरू हुआ उनका जादू। "फेविकोल का जोड़ है, तो तोटे गा ना कोय" – ये लाइनें आज भी याद आती हैं। दो लकड़ियों के बीच की मजबूती को इतने मजेदार तरीके से दिखाया कि लोग हंसते-हंसते खरीदने लगे। फिर आया कैडबरी का वॉरमल्स ऐड। एक लड़की परीक्षा के तनाव में चॉकलेट खाकर नाचने लगती है। ये 2003 का ऐड था, जो बिक्री को आसमान छूने पर मजबूर कर दिया। पियुष कहते थे, "विज्ञापन कोई बिक्री का टूल नहीं, बल्कि लोगों की जिंदगी का हिस्सा बनना चाहिए।" एशियन पेंट्स के लिए उन्होंने "हार गयी हम हर बार" जैसे नारे दिए, जो हार को भी जीत में बदल देते थे।

ओगिल्वी में वे चीफ क्रिएटिव ऑफिसर (सीसीओ) बने, फिर एक्जीक्यूटिव चेयरमैन इंडिया। 2006 में वे वर्ल्डवाइड बोर्ड में शामिल हुए। उनके नेतृत्व में ओगिल्वी इंडिया ने कांस लायंस जैसे ग्लोबल अवॉर्ड्स झाड़े। वे पहले एशियन थे जिन्हें कांस में जूरी प्रेसिडेंट चुना गया। 2016 में पद्मश्री मिला, और 2024 में लंदन इंटरनेशनल अवॉर्ड्स (एलआईए) का लेजेंड अवॉर्ड। लेकिन पियुष कभी घमंडी नहीं बने। वे कहते, "क्रिएटिविटी का मतलब है, आम आदमी की बात को सुनना और उसे बड़ा बनाना।" उनके ऐड्स ने न सिर्फ ब्रांड्स बेचे, बल्कि भारतीय संस्कृति को भी नई पहचान दी। हच का "दाग

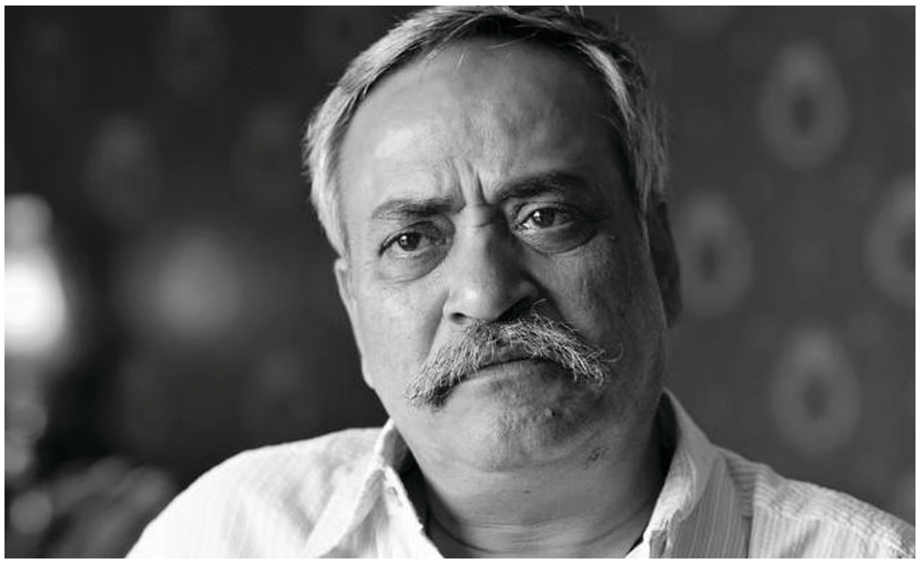

अच्छे हैं" हो या वोडाफोन का "व्हेयरवर यू गो", हर ऐड में हिंदी की वो मिठास थी जो घर-घर पहुंच गई।

ये शुरुआती साल उनके लिए संघर्ष के थे। एक इंटरव्यू में उन्होंने बताया, "मैंने कभी सोचा नहीं था कि विज्ञापन में आऊंगा। लेकिन एक बार आ गया, तो रुक ही गया।" उनके भाई अनुराग कश्यप (फिल्ममेकर) भी कहते हैं कि पियुष घर में हमेशा कहानियां सुनाते थे। ये कहानियां बाद में स्क्रीन पर उतर आईं। 2013 में वे एक्टिंग में आए 'मद्रास कैफे' से। फिर आईसीआईसीआई बैंक के मैजिक पेंसिल प्रोजेक्ट में दिखे। संगीत में भी हाथ आजमाया – "मिले सूर मेरा तुम्हारा" गाने के लिए लिरिक्स लिखे, जो देशभक्ति की मिसाल है। और हां, किताबें भी लिखीं – 'पांडेमोनियम' (2015) और 'ओपन हार्ट' (2021)। इनमें उन्होंने अपनी जिंदगी के किस्से साझा किए, जो पढ़ने वाले को सोचने पर मजबूर कर देते। पियुष का सफर बताता है कि साधारण शुरुआत से भी बड़े सपने पूरे हो सकते हैं, बस दिल में जुनून हो।

हिचक का साया: राजनीति के मैदान में पहली झिझक

पियुष पांडे का नाम विज्ञापन से जुड़ा था, राजनीति से नहीं। उनकी एजेंसी Soho Square (ओगिल्वी का हिस्सा) ने कभी किसी राजनीतिक पार्टी के लिए काम नहीं किया। वे खुलेआम कहते, "हम राजनीति में नहीं पड़ते।" लेकिन 2014 आया, और नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री से देश के प्रधानमंत्री बनने की राह पर थे। भाजपा ने पियुष को अप्रोच किया – 'अब की बार, मोदी सरकार' कैंपेन के लिए। पियुष हिचकिचा गए। एक 2019 के सीएनबीसी इंटरव्यू में उन्होंने कहा, "हमने कभी राजनीतिक काम नहीं किया। और हमने साफ कहा था कि नहीं करेंगे। लेकिन फिर भी किया।"

क्यों हिचक थे? वजह साफ थी। विज्ञापन में वे ब्रांड्स के लिए काम करते, जो तटस्थ होते। राजनीति में पक्ष लेना मतलब विवादों में फंसना। ऊपर से, पियुष खुद को क्रिएटर मानते, न कि प्रोपगैंडा मशीन। लेकिन नरेंद्र मोदी से उनकी पुरानी दोस्ती थी। 2000 के दशक में, जब मोदी गुजरात के सीएम थे, तो पियुष ने गुजरात टूरिज्म कैंपेन के लिए काम किया। वो पहली मुलाकात थी। पियुष को लगा कि मोदी एक ऐसे शख्स हैं जो अपनी बात साफ कहते हैं, लेकिन सुनने को भी तैयार रहते हैं। फिर भी, 2014 का ऑफर आया तो मन डगमगाया। "मैंने सोचा, ये सही नहीं। लेकिन मोदी जी ने कहा, सिर्फ बात कर लो।" ये हिचक सिर्फ पियुष की नहीं, बल्कि पूरे विज्ञापन जगत की थी। राजनीति में घुसना मतलब अपनी निष्पक्षता खोना। लेकिन पियुष ने सोचा, शायद ये मौका हो कुछ नया करने का।

ये पल हमें सोचने पर मजबूर करता है – क्या हम अपनी सीमाओं से डरते हैं? पियुष की तरह, कई लोग नई राह पर कदम रखने से पहले ठिठक जाते हैं। लेकिन कभी-कभी, वो ठहराव ही आगे की राह खोलता है। पियुष ने बाद में कहा, "हिचक तो हर क्रिएटर में होती है। लेकिन अगर दिल कहे, तो कदम बढ़ाओ।" उनकी ये बात आज भी प्रासंगिक है, खासकर जब दुनिया तेजी से बदल रही है। राजनीति में उनका कदम सिर्फ एक ऐड का नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक बदलाव का था। क्योंकि उन्होंने हिंदी को राजनीति में भी सड़क की भाषा बना दिया।

वो बीस मिनट: एक बातचीत जो जिंदगी बदल गई

अब आते हैं उस किस्से पर, जो इस पूरी कहानी का केंद्र है। 2014 का वो दिन, जब पियुष को मोदी से मिलने बुलाया गया। मीटिंग सिर्फ बीस मिनट की थी। टॉपिक? गुजरात के सात टूरिस्ट डेस्टिनेशन पर ऐड्स। लेकिन वो बीस मिनट बीस घंटे बन गए। पियुष बताते हैं, "मुझे लगा, जल्दी खत्म हो जाएगा। लेकिन मोदी जी ने पहली जगह पर ही इतना कुछ बताया कि 45-50 मिनट निकल गए। वो जगह को अंदर-बाहर जानते थे।" बातें बढ़ीं, हंसी-मजाक हुआ, और मीटिंग पांच-छह घंटे चली। मोदी ने खुद कहा, "तुम सही कहो, मैं ज्यादा बोलता हूं। लेकिन इसे 60 सेकंड के ऐड में समेटना है।" पियुष ने हंसते हुए जवाब दिया, "बोलते रहो, मैं तो पैसे लेकर आया हूं। जो जरूरी बातें निकाल लूंगा।"

उस मीटिंग में पियुष को मोदी का व्यक्तित्व पता चला। बिना कागज के, सिर्फ यादों से। वो एक ऐसे शख्स थे जो विजन रखते, लेकिन टीम को स्पेस देते। पियुष ने महसूस किया कि ये कैंपेन पार्टी का नहीं, व्यक्ति का होना चाहिए। नारा बनाया – "अब की बार, मोदी सरकार"। सादा, सीधा, सड़क की भाषा। पियुष कहते, "हम भाषा जानते थे, वो मार्केट। सफलता इसलिए हुई क्योंकि ये आम बोलचाल के शब्द थे। न कोई पार्टी वाली भाषा, न जटिल।" ये नारा इतना हिट हुआ कि अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 2016 में अपना हिंदी नारा लिया – "अब की बार, ट्रंप सरकार"।

ये बीस मिनट हमें क्या सिखाते हैं? कि कभी-कभी, एक छोटी सी बातचीत जिंदगियां बदल सकती है। पियुष की हिचक टूटी, और बाहर आया एक ऐसा नारा जो चुनाव जीत गया। लेकिन ये सिर्फ जीत की कहानी नहीं। ये रचनात्मकता की है – कैसे सुनना और बोलना मिलकर चमत्कार कर सकता है। पियुष ने बाद में कहा, "मोदी जी जैसे लोग मिले, तो इंसान बड़ा सोचने लगता है।" आज, जब हम पीछे मुड़कर देखें, तो लगता है कि वो मीटिंग सिर्फ ऐड की नहीं, बल्कि दोस्ती की थी। राजनीति में भी इंसानियत बची रह सकती है।

नारे की गूंज: राजनीति से संस्कृति तक का सफर

'अब की बार, मोदी सरकार' सिर्फ 2014 का नारा नहीं था। ये एक फेनॉमेनन बन गया। चुनाव में भाजपा की जीत में इसका बड़ा हाथ था। पियुष ने कैंपेन को पर्सनल टच दिया – मोदी को एक आम आदमी का चेहरा बनाया। बाद में, 2019 के चुनाव में "मोदी है तो मुमकिन है" नारे में भी उनकी झलक दिखी। लेकिन पियुष ने कभी क्रेडिट नहीं लिया। वे कहते, "नारा तो लोगों का होता है, मेरा नहीं।"

इसके अलावा, पियुष ने सोशल कैंपेन भी किए। पोलियो जागरूकता के लिए अमिताभ बच्चन के साथ काम किया। "पोलियो का टीका लो, बीमारी को भगाओ" जैसे मैसेजेस। ये दिखाता है कि उनकी क्रिएटिविटी सिर्फ कमर्शियल नहीं, सामाजिक भी थी। राजनीति में उनका कदम विवादास्पद रहा – कुछ ने कहा कि विज्ञापन को राजनीति से दूर रखना चाहिए। लेकिन पियुष का मानना था, "अगर अच्छा मैसेज है, तो क्यों नहीं?" ये बैलेंस्ड व्यू है – एक तरफ स्वतंत्रता, दूसरी तरफ जिम्मेदारी।

उनकी विरासत राजनीति तक सीमित नहीं। फिल्मों में 'भोपाल एक्सप्रेस' का स्क्रीनप्ले, संगीत में देशभक्ति गीत। उन्होंने भारतीय विज्ञापन को ग्लोबल बनाया। 400 से ज्यादा अवॉर्ड्स जीते। लेकिन सबसे बड़ा अवॉर्ड? लोगों के दिलों में जगह।

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है
तूफ़ानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है

जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है
जो रवि के रथ का घोड़ा है

वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा

जो जीवन की आग जला कर आग बना है
फ़ौलादी पंजे फैलाए नाग बना है

जिसने शोषण को तोड़ा शासन मोड़ा है
जो युग के रथ का घोड़ा है

वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा

इसी जन्म में इस जीवन में

इसी जन्म में,
इस जीवन में,

हमको तुमको मान मिलेगा।
गीतों की खेती करने को,

पूरा हिंदुस्तान मिलेगा॥
क्लेश जहाँ है,

फूल खिलेगा,
हमको तुमको त्रान मिलेगा।

फूलों की खेती करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा॥

दीप बुझे हैं,
जिन आँखों के;

इन आँखों को ज्ञान मिलेगा।
विद्या की खेती करने को,

पूरा हिंदुस्तान मिलेगा॥
मैं कहता हूँ,

फिर कहता हूँ;
हमको तुमको प्रान मिलेगा।

मोरों-सा नर्तन करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा॥

दुख ने मुझको

दुख ने मुझको
जब-जब तोड़ा,

मैंने
अपने टूटेपन को

कविता की ममता से जोड़ा,
जहाँ गिरा मैं,

कविताओं ने मुझे उठाया,
हम दोनों ने

वहाँ प्रात का सूर्य उगाया।

केदारनाथ अग्रवाल

आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवि और कथाकार। अपने जनवादी विचारों के लिए प्रसिद्ध। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित।

ऑस्ट्रेलिया के सामने क्यों लुढ़क गई टीम इंडिया?

क्रिकेट के मैदान पर कभी-कभी ऐसा होता है कि सब कुछ साफ-साफ दिखता है, लेकिन जीत हासिल करना मुश्किल हो जाता है। अक्टूबर 2025 में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गई भारतीय टीम को ठोकर लगी। तीन मैचों की वनडे सीरीज में पहले दो मैच हारकर भारत 0-2 से पीछे हो गया। पर्थ में बारिश ने मैच छोटा कर दिया, और एडिलेड में चेज करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने आखिरी ओवरों में जीत हासिल की। यह सीरीज शुभमन गिल की वनडे कप्तानी की शुरुआत थी, लेकिन शुरूआत कड़वी साबित हुई। विराट कोहली दो मैचों में फेल हुए, गिल बल्ले और कप्तानी दोनों में कमजोर पड़े। लेकिन सवाल यह है कि आखिर क्या चीजों ने भारत को नीचा दिखाया? आइए, इस हार के पीछे की कहानी को सरल शब्दों में समझें। यह सिर्फ हार नहीं, बल्कि एक सबक है जो टीम को मजबूत बना सकता है।

भारतीय टीम ने चैंपियंस ट्रॉफी की जीत के बाद यह दौरा शुरू किया था, लेकिन ऑस्ट्रेलिया की तेज गेंदबाजी और घरेलू मैदानों ने सबको चुनौती दी। पहले मैच में भारत ने 136 रन बनाए, जो डीएलएस तरीके से 131 का टारगेट था। ऑस्ट्रेलिया ने आसानी से चेज कर लिया। दूसरे मैच में 264 रनों का स्कोर मजबूत लग रहा था, लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने 46.2 ओवर में 265 रन बना लिए। कुल मिलाकर, यह सीरीज भारत के लिए एक आईना है – जहां बल्लेबाजी की कमजोरी, गेंदबाजी की नरमी और फील्डिंग की लापरवाही साफ दिखी। लेकिन रोहित शर्मा का 73 रनों का संघर्ष भी कुछ सकारात्मक संकेत देता है।

कोहली का दोहरा झटका: बल्ले से क्यों चूके किंग?

विराट कोहली को क्रिकेट का किंग कहा जाता है, खासकर ऑस्ट्रेलिया में जहां उन्होंने कई यादगार पारियां खेली हैं। लेकिन इस सीरीज में वह बिल्कुल फ्लॉप साबित हुए। पहले मैच में पर्थ के मैदान पर कोहली सिर्फ 8 गेंदें खेल सके और 0 पर आउट हो गए। जोश हेजलवुड की गेंद पर उन्होंने ड्राइव खेला, जो बाहर की तरफ निकलकर कवर पर कैच हो गई। दर्शकों ने तालियां बजाईं, लेकिन कोहली का चेहरा उदास था। यह उनका ऑस्ट्रेलिया में पहला डक था, जहां पहले 29 वनडे पारियों में कभी शून्य नहीं आए थे।

दूसरे मैच में एडिलेड ओवल पर हालात और बिगड़े। सिर्फ 4 गेंदें खेलीं, और एक्सावियर बार्टलेट की इनस्विंगर पर एलबीडब्ल्यू हो गए। यह कोहली का करियर में दूसरा लगातार डक था। कुल मिलाकर, दो मैचों में 0 रन। विशेषज्ञ कहते हैं कि कोहली की तकनीक पर सवाल नहीं, लेकिन ऑस्ट्रेलिया की तेज गेंदबाजों ने उन्हें निशाना बनाया। हेजलवुड और स्टार्क ने बैक ऑफ लेंथ पर गेंदबाजी की, जो कोहली को परेशान करती रही। एक तरफ, कोहली का वर्कलोड ज्यादा है – टेस्ट, आईपीएल और अब वनडे। क्या थकान ने असर किया? या फिर उम्र का असर, 37 साल के हो चुके हैं। लेकिन याद रखें, कोहली ने 2027 वर्ल्ड कप की तैयारी के लिए कहा था कि वह फिट हैं। फिर भी, यह फेलियर टीम के लिए झटका है। टॉप ऑर्डर पर दबाव बढ़ गया। अगर कोहली चले तो टीम उड़ान भरती है, लेकिन यहां वह खुद लड़खड़ा गए। यह सोचने पर मजबूर करता है – क्या कोहली को अब आराम की जरूरत है, या फिर नई रणनीति?

दूसरी तरफ, रोहित शर्मा ने कुछ हद तक कोहली का साथ दिया। पहले मैच में 8 रन ही बना सके, लेकिन दूसरे में 73 रन ठोके। 97 गेंदों पर 6 चौके और 2 छक्के लगाए। शुभमन गिल ने भी रोहित की तारीफ की, कहा कि कठिन गेंदबाजी के बीच उन्होंने अच्छा संघर्ष किया। लेकिन रोहित भी टॉप थ्री का हिस्सा हैं, और कुल मिलाकर तीनों ने सिर्फ 100 रन बनाए। यह आंकड़ा बताता है कि समस्या सिर्फ कोहली की नहीं, बल्कि पूरी लाइनअप की है। कोहली की फेलियर ने टीम को शुरुआती झटका दिया, जो पूरे मैच का रंग बदल देती है।

गिल की कप्तानी का पहला कदम: उत्साह क्यों गायब?

शुभमन गिल को वनडे का नया कप्तान बनाया गया, रोहित और कोहली के बाद। टेस्ट में उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज जीती थी, लेकिन वनडे में शुरुआत खराब रही। पहले मैच में 10 रन, दूसरे में 9। बल्ले से तो कमजोर थे ही, कप्तानी में भी सवाल उठे। दोनों मैचों में टॉस हार गए। पर्थ में बादल छाए थे, मैदान नम था – फील्डिंग पहले करनी चाहिए थी। लेकिन गिल को बैटिंग करनी पड़ी, और बारिश ने सब बर्बाद कर दिया। एडिलेड में भी टॉस हारकर बैटिंग, जहां पिच पर नमी थी।

कप्तानी के फैसले पर नजर डालें तो फील्डिंग प्लेसमेंट गलत रही। दूसरे मैच में मैथ्यू शॉर्ट को 14 पर एक्सर पटेल ने ड्रॉप कर दिया, जो बाद में 74 रन बना गया। रनआउट का चांस भी मिस हो गया। गेंदबाजी बदलाव में देरी हुई – हर्षित राणा को शॉर्ट गेंदें डालने दीं, जो ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों को फायदा दे गईं। गिल की कप्तानी में टीम में वह जोश नजर नहीं आया जो रोहित या कोहली के समय दिखता था। खिलाड़ी थोड़े सुस्त लगे, खासकर फील्डिंग में। गिल ने मैच के बाद कहा कि रोहित की पारी सराहनीय थी, लेकिन खुद पर सवाल नहीं उठाए। विशेषज्ञों का मानना है कि गिल युवा हैं, अनुभव की कमी है। लेकिन कप्तानी सिर्फ टॉस जीतना नहीं, बल्कि टीम को मोटिवेट करना है। यह हार गिल को मजबूत बनाएगी, या दबाव बढ़ाएगी? समय बताएगा।

एक पॉजिटिव नोटः गिल ने टीम को एकजुट रखने की कोशिश की। दूसरे मैच में रोहित के साथ 118 रनों की साझेदारी बनी, लेकिन टॉप पर गिल खुद फेल हुए। कप्तानी का टेस्ट फेल तो हुआ, लेकिन 24 साल की उम्र में यह सीखना जरूरी है। भारत ने गौतम गंभीर को कोच बनाया है, जो गिल को गाइड करेंगे। लेकिन सवाल वही है – क्या गिल रोहित-कोहली की तरह लीडर बन पाएंगे?

हार के छिपे राज: टॉप ऑर्डर से गेंदबाजी तक की कमियां

इस सीरीज की हार सिर्फ एक खिलाड़ी या फैसले की नहीं, बल्कि कई वजहों से हुई। आइए, इन्हें सरल तरीके से समझें। पहली वजहः टॉप थ्री का फेल होना। छह इनिंग्स में सिर्फ एक अर्धशतक, कुल 100 रन। गिल-कोहली-रोहित ने बेस बनाना था, लेकिन कंसिस्टेंसी न दिखाई। ऑस्ट्रेलिया की तेज गेंदबाजी ने नई गेंद से हमला बोला – हेजलवुड, स्टार्क और बार्टलेट ने 11 विकेट लिए। भारत के तेज गेंदबाज सिर्फ 5 विकेट ही ले सके। अर्शदीप सिंह ने 2-41 लिया, लेकिन मोहम्मद सिराज का एक भी विकेट नहीं। हर्षित राणा नौसिखिए लगे।

दूसरी बड़ी गलतीः कुलदीप यादव को मौका न देना। ऑस्ट्रेलिया की पिचों पर लेग स्पिनर कारगर होते हैं, लेकिन टीम ने बैटिंग पर फोकस किया। एक्सर पटेल और वॉशिंगटन सुंदर ने अच्छा गेंदबाजी की, लेकिन इम्पैक्ट न था। गंभीर का यह फैसला बैकफायर हो गया। तीसरीः फील्डिंग की लापरवाही। ड्रॉप कैच, मिस्ड रनआउट – ये छोटी गलतियां मैच पलट देती हैं। एशिया कप से फील्डिंग पर सवाल उठ रहे हैं, यहां फिर वही समस्या।

चौथीः मौसम और टॉस का खेल। पर्थ में बारिश ने मैच 26 ओवर का कर दिया, भारत 136/9 पर सिमट गया। एडिलेड में पिच नम थी, तेज गेंदबाजों को फायदा। भारत ने 17 वनडे मैचों से टॉस नहीं जीता – यह आंकड़ा चिंताजनक है। पांचवींः मिडिल ऑर्डर ने कुछ राहत दी, जैसे श्रेयस अय्यर का 61 और एक्सर का 44, लेकिन टॉप का कंसलेशन न बचाया। ऑस्ट्रेलिया ने युवा खिलाड़ियों से चमक दिखाई – कूपर कोनोली का 61*, मैथ्यू शॉर्ट का 74। भारत को भी युवाओं पर भरोसा है, लेकिन बैलेंस की कमी।

ये वजहें बताती हैं कि हार बहुआयामी है। एक तरफ रणनीति की कमजोरी, दूसरी तरफ एक्जीक्यूशन का फेल। लेकिन रोहित का 73 रन दिखाता है कि अनुभव अभी बाकी है। यह सोचने लायक है – क्या भारत 2027 वर्ल्ड कप से पहले इन कमियों को सुधार पाएगा?

सीरीज से सबक: आगे कैसे उभरें भारत?

यह 0-2 की हार दुखी तो करती है, लेकिन क्रिकेट में हार से ही सीख मिलती है। तीसरा मैच सिडनी में डेड रबर है, लेकिन यहां मौका है खुद को साबित करने का। गिल को कप्तानी में सुधार करने होंगे – फील्डिंग ड्रिल्स बढ़ानी होंगी, टॉस पर लकीर तोड़नी होगी। कोहली को फॉर्म वापस लाना होगा; शायद नेट्स में ज्यादा प्रैक्टिस। कुलदीप को तीसरे मैच में मौका मिल सकता है, जो स्पिन की ताकत दिखाए।

विशेषज्ञों का कहना है कि गंभीर को कोचिंग स्टाइल बदलनी होगी। फील्डिंग पर फोकस, और ऑलराउंडर्स का बैलेंस। रोहित का फ्यूचर अनिश्चित है, लेकिन उनकी पारी ने दिखाया कि वह अभी खेल सकते हैं। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी बेंच स्ट्रेंथ दिखाई, भारत को भी ऐसा करना होगा। यह हार एक चेतावनी है – घर से बाहर खेलना आसान नहीं। लेकिन भारत की ताकत उसकी गहराई है। युवा जैसे गिल, अय्यर, रेड्डी उभर रहे हैं। अगर इन कमियों को जल्दी पकड़ा, तो 2027 वर्ल्ड कप में भारत फिर चमक सकता है।

दो पुलिस अफसरों की मौत

एक विधायक का छिपा कनेक्शन

हरियाणा पुलिस में पिछले कुछ दिनों में दो बड़ी घटनाएं हुईं, जिन्होंने पूरे देश का ध्यान खींच लिया। एक तरफ सीनियर आईपीएस अधिकारी वाई. पूरन कुमार ने खुद को गोली मार ली, तो दूसरी तरफ एएसआई संदीप लाठर ने भी वही कदम उठाया। दोनों मौतें सुसाइड बताई जा रही हैं, लेकिन इनके पीछे भ्रष्टाचार, दबाव और जाति जैसे मुद्दे छिपे हैं। अब सवाल उठ रहा है कि इन मौतों से आम आदमी पार्टी के एक विधायक का क्या लेना-देना? क्या ये सिर्फ व्यक्तिगत दुख की कहानी है या सिस्टम की गहरी बीमारी? आइए, सरल शब्दों में समझते हैं इस पूरी घटना को, बिना किसी जलजलाहट के। हम हर पहलू को देखेंगे, ताकि आप खुद सोच सकें कि न्याय कैसे मिलेगा।

ये घटनाएं अक्टूबर 2025 की हैं। पूरन कुमार की मौत 7 अक्टूबर को चंडीगढ़ में हुई, जबकि संदीप लाठर 14 अक्टूबर को रोहतक के लधोत गांव में मिले। दोनों के सुसाइड नोट और वीडियो में एक-दूसरे पर गंभीर आरोप हैं। संदीप के नोट में पूरन को भ्रष्ट बताया गया, तो पूरन के नोट में सिस्टम पर सवाल। बीच में आता है अमित रतन का नाम, जो पूरन के साले और पंजाब से एएपी के विधायक हैं। ये कनेक्शन सिर्फ परिवार का नहीं, बल्कि पावर और पैसे का जाल लगता है। लेकिन याद रखें, ये आरोप हैं, अभी कोर्ट में साबित नहीं हुए। दोनों तरफ की बात सुनना जरूरी है, क्योंकि सच्चाई कहीं बीच में छिपी हो सकती है।

आईपीएस पूरन कुमार: ईमानदारी की कीमत क्या थी?

वाई. पूरन कुमार हरियाणा के एक जाना-माने आईपीएस अधिकारी थे। वे दलित समुदाय से थे और कई सालों से पुलिस में सेवा दे रहे थे। 7 अक्टूबर 2025 को चंडीगढ़ में उन्होंने अपनी सर्विस रिवॉल्वर से खुद को गोली मार ली। मौत से पहले उन्होंने अपनी आईएएस पत्नी अमनीत पी. कुमार को 8 पेज का सुसाइड नोट भेजा। इस नोट में पूरन ने 15 वरिष्ठ अधिकारियों के नाम लिए, जिनमें डीजीपी शत्रुजीत कपूर भी शामिल थे। उन्होंने लिखा कि इन्होंने उन्हें मानसिक प्रताड़ना दी, जाति के आधार पर भेदभाव किया। पूरन ने बताया कि 5 दिनों तक उन्हें गैरकानूनी हिरासत में रखा गया, शराब के व्यापारियों से वसूली के झूठे आरोप लगाए गए।

ये नोट पढ़कर कोई भी सोचेगा कि पुलिस महकमे में कितना दबाव होता है। पूरन की मौत के बाद चंडीगढ़ पुलिस ने नोट के आधार पर उन 15 अधिकारियों पर केस दर्ज किया। एक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (एसआईटी) बनाई गई, जो पूरन के लैपटॉप, मोबाइल और कॉल डिटेल्स की जांच कर रही है। मौत से एक दिन पहले पूरन ने अपनी पत्नी अमनीत से वीडियो कॉल करने की कोशिश की, जो जापान दौरे पर थीं। लेकिन बात नहीं हो सकी। उनकी बेटी भी विदेश में थी। अमनीत ने शुरू में पोस्टमॉर्टम का विरोध किया, लेकिन 15 अक्टूबर को

सहमति दी। अंतिम संस्कार पीजीआईएमईआर में हुआ।

अब सवाल ये है कि पूरन की मौत का ट्रिगर क्या था? बताया जाता है कि 6 अक्टूबर को रोहतक में एक भ्रष्टाचार का केस दर्ज हुआ, जिसमें पूरन के गनमैन सुशील कुमार का नाम था। सुशील पर वसूली के आरोप थे। पूरन को लगता था कि ये केस उनके खिलाफ साजिश है। अमनीत ने भी दो अधिकारियों पर सुसाइड के लिए उकसाने का केस दर्ज कराया, जिसमें एससी/एसटी एक्ट भी लगाया गया। हरियाणा सरकार ने डीजीपी कपूर को छुट्टी पर भेज दिया और रोहतक के एसपी नरेंद्र बिजरनिया को ट्रांसफर कर दिया। ये कदम दिखाते हैं कि सरकार मामले को गंभीरता से ले रही है। लेकिन क्या ये काफी है? पूरन जैसे ईमानदार अफसरों की मौत सिस्टम पर सवाल उठाती है। क्या जाति अभी भी पुलिस में बाधा बनती है? ये सोचने वाली बात है।

एएसआई संदीप लाठर: आखिरी वीडियो में छिपी सच्चाई

संदीप लाठर रोहतक के साइबर सेल में तैनात थे। वे 41 साल के थे और परिवार के इकलौते कमाने वाले। 14 अक्टूबर 2025 को वे अपने मामा के खेत में मिले, सिर में गोली लगी हुई। पुलिस ने इसे सुसाइड बताया। संदीप ने मौत से पहले एक वीडियो और सुसाइड नोट छोड़ा। वीडियो में उन्होंने आईपीएस पूरन कुमार पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए। कहा कि पूरन ने ऑफिस में कर्मचारियों को जाति के आधार पर हटाया, भ्रष्ट लोगों को लगाया। उनका गनमैन सुशील हर आने-जाने वाले से पैसे मांगता था। संदीप ने कहा कि पूरन भ्रष्टाचार के खुलासे से डरकर सुसाइड कर चुके हैं।

संदीप खुद उसी भ्रष्टाचार केस की जांच कर रहे थे, जिसमें सुशील को गिरफ्तार किया गया था। मौत से एक हफ्ता पहले संदीप तनाव में थे। उनकी पत्नी संतोष ने बताया कि वे कहते थे, 'पुलिस में ईमानदारी की कोई वैल्यू नहीं। ईमानदार अफसर सजा पा रहे हैं।' संतोष ने 15 अक्टूबर को रोहतक सदर थाने में एफआईआर दर्ज कराई। इसमें चार लोगों पर सुसाइड के लिए उकसाने का आरोप लगाया – आईएएस अमनीत कुमार, विधायक अमित रतन, सुशील कुमार और एक अन्य सुनील कुमार। संतोष का कहना है कि पूरन का परिवार एक 'ग्रुप' चलाता था, जो पद का रौब दिखाकर लोगों को डराता था। संदीप को भी धमकियां मिलीं। संतोष ने कहा, 'ये ईमानदार और भ्रष्ट की लड़ाई है।' उन्होंने सीबीआई जांच की मांग की, क्योंकि प्रभावशाली लोग शामिल हैं।

पुलिस ने डीएसपी दिलीप सिंह के नेतृत्व में चार सदस्यीय एसआईटी बनाई। इसमें सदर थाने के एसएचओ सुरेंद्र कुमार भी हैं। एसआईटी अमनीत और अमित से पूछताछ करेगी। संदीप के भाई शीशपाल ने कहा कि ये हत्या है, सुसाइड नहीं। हरियाणा के सीएम नायब सिंह सैनी 14 अक्टूबर के बाद संदीप के घर पहुंचे और परिवार से मिले। पुलिस ने संदीप के परिवार के लिए फंडरेजर शुरू किया, ताकि आर्थिक मदद मिले। पोस्टमॉर्टम 16 अक्टूबर को हुआ, अंतिम संस्कार के बाद। संदीप का वीडियो देखकर लगता है कि वे कुछ बड़ा उजागर करना चाहते थे। लेकिन क्या ये आरोप सही हैं? या दबाव में बोला गया? जांच ही बताएगी। ये घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि निचले स्तर के अफसर कितना दबाव झेलते हैं।

विधायक अमित रतन: भ्रष्टाचार के पुराने साये में नया विवाद

अब बात करते हैं उस कनेक्शन की, जो इस केस को राजनीतिक रंग दे रहा है। अमित रतन पंजाब के बठिंडा देहात से एएपी के विधायक हैं। वे आईएएस अमनीत की बहन के पति हैं, यानी आईपीएस पूरन के साले। संदीप के सुसाइड नोट और वीडियो में अमित का नाम आया। संदीप ने कहा कि पूरन-अमनीत-अमित का ग्रुप पद का लाइसेंस लेकर लोगों को धमकाता है। संतोष की एफआईआर में भी अमित का नाम है। आरोप है कि इस ग्रुप ने संदीप को डराया, क्योंकि वे भ्रष्टाचार की जांच कर रहे थे।

अमित पर ये पहला विवाद नहीं। फरवरी 2023 में बठिंडा के घुद्दा गांव में रिश्वत का केस चला। 15वें वित्त आयोग ने गांव को 25 लाख की ग्रांट दी। सरपंच सीमा रानी के पति प्रितपाल ने आरोप लगाया कि अमित ने ग्रांट के बदले 5 लाख मांगे, जो 4 लाख पर तय हुए। 16 फरवरी को अमित ने प्रितपाल को पंजाब सर्किट हाउस बुलाया। वहां अमित के पीए रिशम गर्ग ने गाड़ी में 4 लाख लिए। प्रितपाल ने विजिलेंस टीम को इशारा किया, पीए पकड़ा गया। अमित कमरे में थे, लेकिन भाग निकले। सीसीटीवी में भागते हुए कैद हुए। ऑडियो में अमित घूस मांगते सुनाई दिए, जो सीएफएसएल लैब ने सत्यापित किया। 22 फरवरी को शंभू बॉर्डर से अमित गिरफ्तार हुए। उन्होंने पीए को जानने से इनकार किया। 22 मई को 3 महीने जेल काटने के बाद बेल मिली। केस जिला कोर्ट में चल रहा, हाईकोर्ट से स्टे है।

प्रितपाल ने कहा कि अमित अपनी आईएएस बहन, आईपीएस जीजा और आईपीएस पत्नी का रौब दिखाते हैं। कई लोग घूस के शिकार हुए, लेकिन डर से चुप हैं। अब ये पुराना केस संदीप सुसाइड से जुड़ गया। अमित निर्दोष बताते हैं, लेकिन एएपी पर सवाल उठ रहे हैं। क्या पार्टी ऐसे सदस्यों को साफ रखेगी? ये कनेक्शन दिखाते हैं कि परिवार और राजनीति कैसे आपस में उलझी है। लेकिन याद रखें, अमित पर अभी सजा नहीं हुई। दोनों तरफ की बात सुनी जानी चाहिए।

भ्रष्टाचार, जाति और सत्ता: सिस्टम की गहरी दरारें

ये दोनों सुसाइड सिर्फ व्यक्तिगत नहीं, सिस्टम की कहानी बयान करते हैं। एक तरफ पूरन ने जातिगत भेदभाव का रोना रोया, दूसरी तरफ संदीप ने भ्रष्टाचार का। रोहतक का वो भ्रष्टाचार केस वसूली से जुड़ा था – गनमैन सुशील पर पैसे ऐंठने के आरोप। संदीप की टीम ने सुशील को पकड़ा, लेकिन आगे दबाव आया। पूरन की मौत के बाद अमनीत ने राजनीतिक दबाव बनाया, तो संदीप टूट गए। संतोष कहती हैं, 'ईमानदार अफसरों को सजा मिल रही है।' पूर्व आईपीएस राजबीर देशवाल ने कहा कि पूरन की मौत दलित भेदभाव से हुई।

राजनीतिक कोण मजबूत है। अमित एएपी से हैं, जहां पार्टी भ्रष्टाचार विरोधी बनी है। लेकिन उनका केस पार्टी की छवि खराब कर रहा। हरियाणा में बीजेपी सरकार है, सीएम सैनी ने संदीप परिवार का साथ दिया। विपक्ष सीबीआई जांच मांग रहा। क्या ये केस पावरफुल परिवारों के खिलाफ जंग बनेगा? या दब जाएगा? जांच में डिजिटल सबूत, ऑडियो-वीडियो महत्वपूर्ण होंगे। हरियाणा पुलिस फंडरेजर चला रही, जो अच्छा कदम है। लेकिन असली सवाल ये है – क्या सिस्टम बदलेगा? ईमानदार अफसर सुरक्षित होंगे? ये मौतें हमें सोचने को मजबूर करती हैं कि पावर कहां तक जायज है।

आगे की राह: न्याय की आस या लंबी लड़ाई?

अभी एसआईटी जांच चल रही। अमनीत और अमित से पूछताछ होगी। संतोष सीबीआई चाहती हैं, क्योंकि लोकल पुलिस पर भरोसा नहीं। पूरन केस में भी पारदर्शिता की मांग है। अगर सीबीआई आई, तो सच्चाई बाहर आएगी। लेकिन क्या होगा अगर आरोप झूठे साबित हुए? या सिस्टम के बड़े खिलाड़ी बच गए? ये घटनाएं दिखाती हैं कि पुलिस में दबाव कितना गहरा है। परिवार टूट रहे, अफसर हार मान रहे। हमें सोचना चाहिए – क्या हमारा सिस्टम कमजोरों की रक्षा करता है? या पावरफुल की ढाल?

ट्रंप का धमाका: कनाडा के साथ व्यापार की राह में बड़ा रोड़ा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक विज्ञापन के नाम पर कनाडा के साथ सभी व्यापार वार्ताओं को अचानक बंद करने का ऐलान कर दिया है। यह खबर 23 अक्टूबर 2025 की रात को आई, जब ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रूथ सोशल पर पोस्ट किया। वे कहते हैं कि कनाडा ने एक झूठा विज्ञापन चलाकर अमेरिकी अदालतों में हस्तक्षेप करने की कोशिश की। लेकिन क्या यह सिर्फ एक विज्ञापन की बात है, या इसके पीछे महीनों से चल रहे व्यापारिक झगड़े हैं? हम इस लेख में सरल शब्दों में पूरी कहानी समझेंगे। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि दो पड़ोसी देशों के बीच व्यापार कितना नाजुक हो सकता है। आइए, स्टेप बाय स्टेप देखें कि क्या हुआ, क्यों हुआ, और आगे क्या हो सकता है।

यह कहानी सिर्फ राजनीति की नहीं, बल्कि आम लोगों की जिंदगी से जुड़ी है। अमेरिका और कनाडा के बीच रोजाना अरबों डॉलर का व्यापार होता है। अगर यह रुका, तो कारखानों में नौकरियां खतरे में पड़ सकती हैं, कीमतें बढ़ सकती हैं। लेकिन दोनों तरफ से तर्क हैं – एक तरफ राष्ट्रीय सुरक्षा, दूसरी तरफ निष्पक्ष व्यापार। हम दोनों पक्षों को बराबर जगह देंगे, ताकि आप खुद फैसला कर सकें।

ट्रंप का आकस्मिक फैसला: एक पोस्ट ने बदल दी तस्वीर

कल्पना कीजिए, आप किसी दोस्त से बात कर रहे हैं, सब ठीक चल रहा है, और अचानक वो गुस्से में फोन काट देता है। कुछ वैसा ही हुआ है अमेरिका और कनाडा के साथ। 23 अक्टूबर 2025 की रात को, राष्ट्रपति ट्रंप ने ट्रूथ सोशल पर लिखा, "उनके घिनौने व्यवहार के आधार पर, कनाडा के साथ सभी व्यापार वार्ताएं अभी से समाप्त की जाती हैं।" वे कहते हैं कि टैरिफ (आयात शुल्क) अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा और अर्थव्यवस्था के लिए बहुत जरूरी हैं। ट्रंप का आरोप है कि कनाडा ने एक फर्जी विज्ञापन चलाकर अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के फैसले में दखल देने की कोशिश की।

यह फैसला इतना तेज था कि कनाडा को भी ज्यादा वक्त नहीं मिला। एक वरिष्ठ कनाडाई अधिकारी ने बताया कि ओटावा को ट्रंप के फैसले की जानकारी पोस्ट से ठीक पहले दी गई। ट्रंप ने पहले ही हफ्ते में इस विज्ञापन को देखा था और हंसते हुए कहा था, "अगर मैं कनाडा होता, तो मैं भी ऐसा ही विज्ञापन चलाता। लेकिन लोग इतने बेवकूफ नहीं हैं।" लेकिन रात होते-होते बात इतनी गंभीर हो गई कि वार्ताएं बंद।

ट्रंप का यह स्टाइल नया नहीं है। वे अक्सर सोशल मीडिया से बड़े फैसले लेते हैं, जो बाजारों को हिला देता है। अगले दिन, 24 अक्टूबर को, एक्स (पूर्व ट्विटर) पर लोग चर्चा कर रहे थे। एक यूजर ने लिखा, "एक फर्जी क्लिप ने अंतरराष्ट्रीय संकट पैदा कर दिया।" दूसरा बोला, "ट्रंप का गुस्सा सोशल मीडिया की स्पीड से चलता है, बाजार तो बस साइड में हैं।" यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है – क्या व्यापार जैसे बड़े मुद्दे इतने जल्दी सुलझ सकते हैं, या यह सिर्फ शुरुआत है?

ट्रंप के मुताबिक, यह विज्ञापन सुप्रीम कोर्ट के उस केस से जुड़ा है, जो नवंबर में सुनवाई के लिए है। वह केस ट्रंप के टैरिफ को इंटरनेशनल इमरजेंसी इकोनॉमिक पावर्स एक्ट के तहत वैध मानने पर सवाल उठाता है। ट्रंप कहते हैं कि कनाडा ने रोनाल्ड रीगन की आवाज का गलत इस्तेमाल किया ताकि अमेरिकी जजों को प्रभावित करें। लेकिन क्या यह सचमुच हस्तक्षेप था, या सिर्फ अपनी बात रखना? हम अगले हिस्से में विज्ञापन की डिटेल देखेंगे।

यह फैसला सिर्फ शब्दों का नहीं। इससे पहले, ट्रंप ने कनाडाई स्टील और एल्युमिनियम पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाए थे। अगर वार्ताएं बंद रहीं, तो और सख्ती हो सकती है। लेकिन ट्रंप के समर्थक इसे मजबूत कदम मानते हैं, जो अमेरिकी मजदूरों की रक्षा करता है। दूसरी तरफ, आलोचक कहते हैं कि यह पड़ोसी देश के साथ दुश्मनी बढ़ाएगा। कुल मिलाकर, यह घटना दिखाती है कि कैसे एक छोटी सी बात बड़े रिश्ते तोड़ सकती है।

वह विवादास्पद विज्ञापन: रीगन की आवाज बनी ट्रिगर

अब बात करते हैं उस विज्ञापन की, जिसने यह सब हंगामा मचा दिया। यह विज्ञापन कनाडा के ओंटारियो प्रांत की सरकार ने चलाया था। प्रीमियर डग फोर्ड ने इसे लॉन्च किया और कहा, "हम कभी नहीं रुकेंगे अमेरिकी टैरिफ के खिलाफ आवाज उठाने से। समृद्धि का रास्ता साथ मिलकर काम करने से है।" विज्ञापन का खर्च 75 मिलियन कनाडाई डॉलर था, जो अमेरिकी टीवी चैनलों पर चला – जैसे फॉक्स न्यूज, एनबीसी, सीबीएस।

विज्ञापन में क्या था? यह एक मिनट का क्लिप था, जिसमें पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन की 1987 की रेडियो स्पीच का हिस्सा इस्तेमाल किया गया। रीगन कहते हैं, "जब कोई कहता है कि विदेशी आयात पर टैरिफ लगाएं, तो लगता है कि यह देशभक्ति है, अमेरिकी उत्पादों और नौकरियों की रक्षा। लेकिन लंबे समय में, ऐसे बैरियर हर अमेरिकी को नुकसान पहुंचाते हैं। विदेशी देश जवाबी कार्रवाई करते हैं, ट्रेड वॉर शुरू हो जाते हैं, बाजार सिकुड़ते हैं, कारोबार बंद होते हैं, और लाखों लोग बेरोजगार हो जाते हैं।" विज्ञापन में न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज की तस्वीरें और अमेरिका-कनाडा के झंडे वाले क्रेन दिखाए गए।

ट्रंप इसे "फर्जी" कहते हैं। लेकिन ओंटारियो सरकार का कहना है कि यह रीगन की मूल स्पीच का अनएडिटेड एक्सट्रैक्ट है, जो पब्लिक डोमेन में उपलब्ध है। फोर्ड के प्रवक्ता ने कहा, "रीगन जानते थे कि टैरिफ अमेरिकी अर्थव्यवस्था, मजदूरों और परिवारों को चोट पहुंचाते हैं। वे फ्री और फेयर ट्रेड के समर्थक थे।" रोनाल्ड रीगन फाउंडेशन ने एक्स पर पोस्ट किया कि यह "सेलेक्टिव ऑडियो और वीडियो" का इस्तेमाल है, बिना परमिशन के, और वे कानूनी विकल्प देख रहे हैं।

यह विज्ञापन क्यों चला? क्योंकि ट्रंप के टैरिफ ने कनाडा को बुरी तरह प्रभावित किया है। खासकर ऑटो सेक्टर, जो ओंटारियो में है। स्टेलैंटिस कंपनी ने इस महीने ही एक प्रोडक्शन लाइन को ओंटारियो से इलिनॉय शिफ्ट करने का ऐलान किया। फोर्ड ने पहले भी ट्रंप को चिढ़ाया था – जैसे बिजली निर्यात पर सरचार्ज लगाकर। लेकिन विज्ञापन ने बात को निजी बना दिया। एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, "डग फोर्ड को किसी ने रोकना चाहिए था। अब पूरा कनाडा भुगतेगा।"

यह विज्ञापन हमें सोचने पर मजबूर करता है – क्या पुरानी स्पीच का इस्तेमाल प्रोपगैंडा है, या वैध तर्क? रीगन खुद फ्री ट्रेड के हिमायती थे, लेकिन ट्रंप का मानना है कि आज के समय में टैरिफ जरूरी हैं। यह बहस पुरानी है, लेकिन इसका असर नया है। अब देखते हैं कि यह झगड़ा कैसे शुरू हुआ।

अमेरिका-कनाडा व्यापार संबंधों की पृष्ठभूमि: दोस्ती में दरारें

अमेरिका और कनाडा दुनिया के सबसे करीबी व्यापारिक साझेदार हैं। रोजाना सीमा से 3.6 बिलियन कनाडाई डॉलर (लगभग 2.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर) का सामान और सर्विसेज पार करते हैं। कनाडा के 75 प्रतिशत से ज्यादा निर्यात अमेरिका जाते हैं। लेकिन 2025 में यह रिश्ता खराब हो गया। फरवरी 1, 2025 को ट्रंप ने यूनिवर्सल टैरिफ लगाए – कनाडाई आयात पर 35 प्रतिशत, धातुओं पर 50 प्रतिशत, और कारों पर 25 प्रतिशत।

यह ट्रेड वॉर की शुरुआत थी। ट्रंप कहते हैं कि टैरिफ अमेरिकी नौकरियों बचाते हैं। कनाडा ने जवाब में अमेरिकी सामान पर टैरिफ लगाए, लेकिन कुछ छूट दी। फिर मार्च में फोर्ड ने बिजली निर्यात पर सरचार्ज लगाया, तो ट्रंप ने धातु टैरिफ दोगुने कर दिए। जून तक यह 50 प्रतिशत हो गया।

इसके बीच, कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी (पूर्व बैंकर) ने 7 अक्टूबर को व्हाइट हाउस विजिट की। ट्रंप ने स्टील, एल्युमिनियम और एनर्जी पर वार्ता शुरू करने को कहा। कार्नी ने कहा, "हमारी ताकत अब कमजोरी बन गई है। हम 10 साल में अमेरिका के बाहर निर्यात दोगुना करेंगे।" लेकिन विज्ञापन आने के बाद सब उलट गया।

यूएसएमसीए (यूएस-मेक्सिको-कनाडा एग्रीमेंट) ट्रंप के पहले टर्म में बना था, लेकिन अब वे इससे नाराज हैं। यह एग्रीमेंट टैरिफ से कुछ छूट देता है, लेकिन रिव्यू हो रहा है। विशेषज्ञ कहते हैं कि यह टेंशन उत्तरी अमेरिका की एकता को खतरा है। एक्स पर एक यूजर ने लिखा, "ट्रंप 2.0 में ट्रेड वॉर कभी न खत्म होंगे।" (नोटः यह एनालिसिस से लिया गया।)

यह इतिहास हमें बताता है कि झगड़े नए नहीं, लेकिन हल निकालना जरूरी है। दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाएं आपस में जुड़ी हैं – अमेरिका को कनाडा से तेल, लकड़ी, कार पार्ट्स मिलते हैं। कनाडा को अमेरिकी बाजार। अगर टूटा, तो दोनों को नुकसान। अब देखते हैं कनाडा क्या कह रहा है।

कनाडा की प्रतिक्रिया: चुप्पी और बचाव की कोशिश

ट्रंप के ऐलान के तुरंत बाद कनाडा में सन्नाटा छा गया। प्रधानमंत्री कार्नी के ऑफिस ने अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया। वे 24 अक्टूबर को एशिया समिट के लिए रवाना हो रहे थे। फोर्ड ने भी चुप्पी साधी, लेकिन उनके प्रवक्ता ने बचाव किया। उन्होंने कहा कि विज्ञापन में रीगन की स्पीच का सही इस्तेमाल हुआ है, और यह फ्री ट्रेड का संदेश देता है।

कनाडा-यूएस ट्रेड मिनिस्टर डोमिनिक ले ब्लैंक के प्रवक्ता ने बुधवार को कहा था कि वार्ता प्रगति पर हैं। लेकिन अब सब रुक गया। एक्स पर कनाडाई यूजर्स गुस्से में हैं। एक ने लिखा, "फोर्ड ने मजाक किया, अब पूरा देश भुगतेगा।" दूसरा बोला, "यह बेवकूफी है, लेकिन ट्रंप का ओवररिएक्शन भी।"

विशेषज्ञों की राय मिश्रित है। कुछ कहते हैं कि यह ट्रंप की नेगोशिएशन टैक्टिक है – गुस्सा दिखाकर बेहतर डील निकालना।

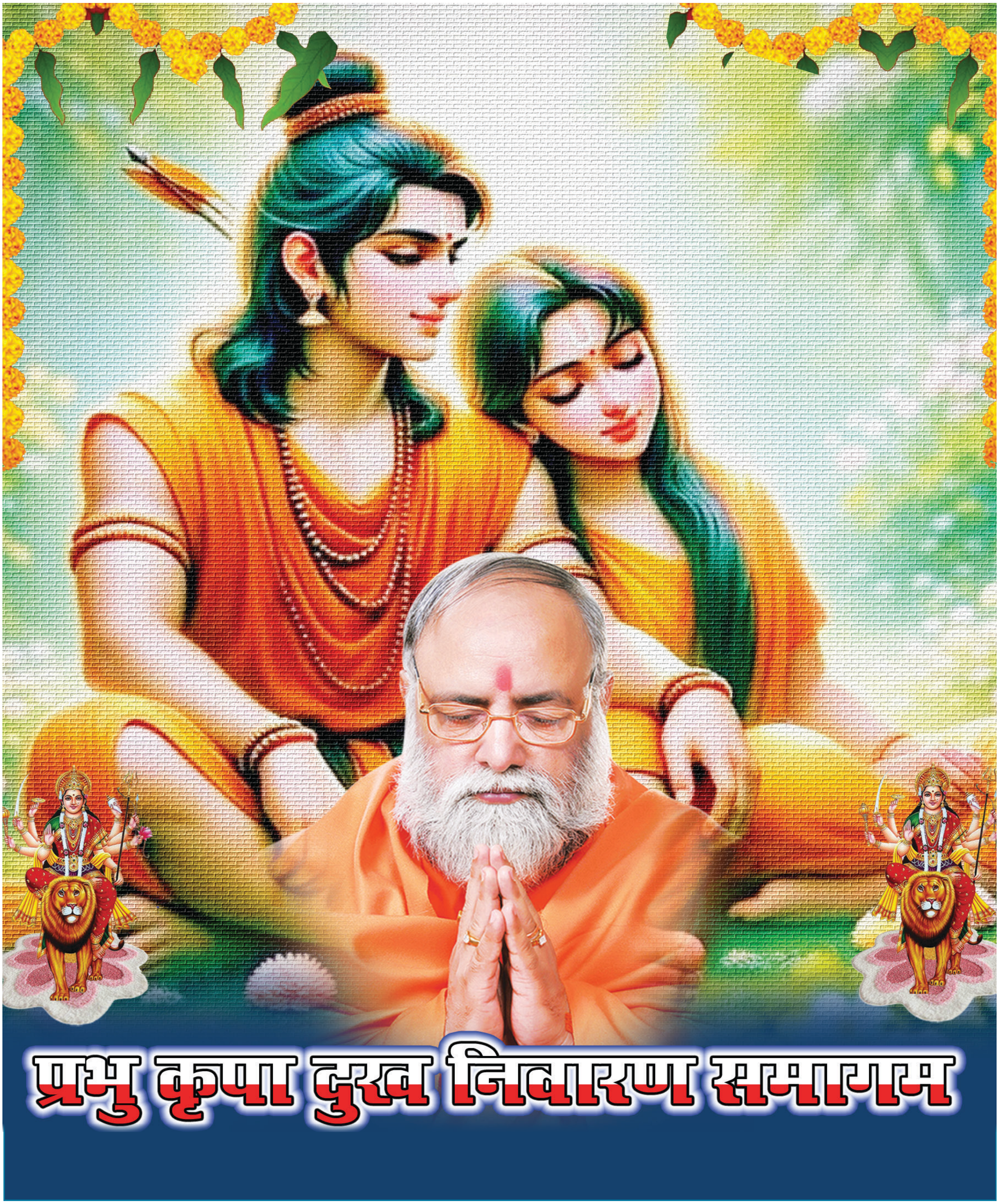
प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY
Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML
15 ML

NO
ARITIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :
amazon
arihanta.in

Arihanta Industries